ओ३म्

वैदिक पंच - महायज्ञ

जीवनदायिनी

नित्यकर्म - विधी

: प्रकाशक :

...दिक साहित्य प्रचार केंद्र

...वलानंद सरस्वती

...कनवार भाइ बसीलाल स्मारक आर्य वसतिगृह,

श्यामलाल अभियांत्रिकी महाविद्यालय, उदगीर - ४१३ ५१७, जि.लातूर (महा.)

वैदिक पंच - महायज्ञ

जीवनदायिनी

नित्यकर्म - विधि

विशेष संस्करण

संग्रहकर्ता

स्वामी केवलानन्द सरस्वती

ज्ञान सागर वैदिक साहित्य प्रचार केंद्र
कर्मवीर भाई बंसीलाल स्मारक आर्य वसतिगृह,
श्यामलाल अभियांत्रिकी महाविद्यालय, उदगीर - ४१३५१७.
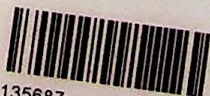
ग्रंथाचे नाव : वैदिक पंच-महायज्ञ जीवनदायिनी नित्यकर्म - विधि

संकलन कर्ता : स्वामी केवलानन्द सरस्वती

प्रकाशक : ज्ञानसागर वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र,
कर्मवीर भाई बंसीलाल आर्य वसतिगृह,
लोणी, उदगीर-४१३५१७.

आवृत्ती : प्रथम

फोटो टाईपसेटिंग तथा मुखपृष्ठ : सत्पुरे गोपाळ, कॉम्प्युटर ऑपरेटर,
श्यामलाल अभियांत्रिकी महा., उदगीर.

मुद्रक : स्नेहा ऑफसेट, तिलक नगर, लातूर.

मूल्य : २५ रु. लागत मात्र

प्रकाशन वर्ष : २००० ई. वि.सं. २०५७

प्रतियाँ : २०००

पुस्तक - प्रकाशन

इस अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तक 'वैदिक पञ्च महायज्ञ जीवन दायिनी नित्य कर्म विधिः पुस्तक का विमोचन आर्य जगत के तपोनिष्ठ त्यागी तपस्वी

स्व.भाई बन्सीलालजी आर्य के सुपुत्र, संघर्षशीलता, रचनात्मकता, मूल्यनिष्ठा के मूर्तरूप एवं समग्र शिक्षक **प्राचार्य श्री सदाविजय आर्य** अध्यक्ष, श्यामलाल स्मारक शिक्षण संस्था, उदगीर; संस्थापक, आंतर भारती, औराद शहाजानी के कर-कमलों द्वारा जीवन विकास प्रकल्प, जरोडा के स्नेहमिलन समारोह के अवसर पर दिनांक १ जून २००० को सम्पन्न हुआ.

प्रकाशक

ज्ञान सागर वैदिक साहित्य प्रचार केंद्र

...अनुक्रमणिका...

१. भूमिका ...४
२. विनम्र आभार ...७
३. हृदय-उद्गार ...९
४. सन्ध्योपासनाविधि ...१५
५. देवयज्ञ-रहस्य ...२९
६. अथ ऋत्विग्ववरण - संकल्प ...२९
७. अथ देवयज्ञ - विधिः ...३२
८. ईश्वरस्तुतिग्रन्थनोपासना मन्त्राः ...३३
९. स्वस्तिवाचनम् ...३९
१०. शान्तिकरणम् ...४९
११. यज्ञविधिः ...५९
१२. प्रधान होम की आहुतियाँ ...६४
१३. प्रार्थना ...७५
१४. पूर्णमासी-अमावस्या के मन्त्र ...७६
१५. पितृयज्ञ ...७६
१६. अतिथियज्ञ ...७९
१७. मृत्युंजय जप मन्त्र व्रत धारण-प्रतिज्ञा मन्त्र ...८०
१८. भोजन के पूर्व मन्त्र ...८१
१९. भोजन के पश्चात् मन्त्र, मंगल कामना ...८२
२०. कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ...८३
२१. प्रातः ब्रह्ममूहर्त के मन्त्र ...८४
२२. ईश्वर वन्दना स्तोत्र ...८५
२३. संगठन सूक्त ...९२
२४. राष्ट्रीय वेद प्रार्थना ...९४
२५. यज्ञ - प्रार्थना ...९५
२६. मंगलकामना ...९६
२७. ओ३म् वन्दन प्रार्थना, ओ३म् नाम रस पीजे ...९७
२८. बल-बुद्धि-प्रार्थना ...९८
२९. अमृत पीवे कोई कर्मोंवाला ...९९
३०. ओ३म् कीर्तन ...१००
३१. महामन्त्र गायत्री वन्दन ...१०१
३२. गायत्री मन्त्र महिमा ...१०२
३३. जपले गायत्री बावरिया ...१०४
३४. ओ३म् नाम के हिरे मोती ...१०५
३५. ओ३म् प्रभु से प्यार नहीं ...१०६
३७. नमस्ते गौरव ...१०७
३८. ओ३म् कीर्तन इक्कीसा ...१०८
३९. देवयज्ञ की महिमा ...११०
४०. ब्रह्मयज्ञ-स्वन्ध्या महिमा ...१११

...अनुक्रमणिका...

४१. जीवात्मा-परमात्मा के वियोग में ...११२

४२. श्रीराम-कृष्ण को भगवान क्यों कहते हैं? ...११३
श्री राम के भक्तों से

४३. राष्ट्रीय श्रीराम कीर्तन ...११४

४४. आदर्श गृहस्थ आश्रम ...११५

४५. ओ३म् जप बावरे ...११६

४६. भक्त सूरदास का भजन ...११७

४७. प्रभुजी मेरे दुर्गुन दूर करो ...११८

४८. नौ द्वारे का पिंजरा ...११९

४९. सभी को जाना है स्मशान ...१२०

५०. मोहे और न प्रभु तरसाओ ...१२१

५१. प्रभुने देखो कैसा रचा है संसार ...१२२

५२. अश्वपति की घोषणा ...१२३

५३. चेतावनी अन्धविश्वासी को ...१२४

५४. रे प्राणी मत कर तू अभिमान ...१२५

५५. राष्ट्र की उन्नति कैसे हो? ...१२६

५६. फूलों से तुम हँसना सीखो ...१२७

५७. भगवन पार करो मेरी नैया ..१२८

५८. धन की सीमा ...१२९

५९. मेधा बुद्धि - प्रार्थना ...१३०

६०. प्रातः बेला जाग अमृत ...१३१

६१. मांग रहे हम वरदान ...१३२

६२. ओ३म् नाम के साबुन से ...१३३

६३. बेटी को माँ का उपदेश ...१३४

६४. विश्व में शान्ति रहे ...१३५

६५. बालक के जन्म दिवस पर ...१३६

६६. वैदिक आरती भजन ...१३७

६७. ऋषि गुणगान ...१३८

६८. महर्षि दयानन्द का सन्देश ...१३९

६९. जग में क्या खोया क्या पाया रे! ...१४०

७०. ऋषि गुण गान ...१४१

७१. कभी न भूलें तेरा नाम ...१४२

७२. कृष्ण - वचन ...१४३

७३. कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ...१४४

७४. नवदम्पति को मंगल कामना ...१४५

७५. ईश्वर विश्वास परः ब्रह्मकवि-बीरबल व अकबर ...१४६

७६. दान दाताओं की सूची ...१४७

७५. आर्य समाज के दस नियम ...१४८

भूमिका...

वैदिक संस्कृति में मानव जीवन के सर्वांगीण विकास पर बल दिया गया है. मानव को चाहिए कि वह भौतिक संपदा में निरंतर वृद्धि करता रहे. वेदों में कहा है 'वयं स्याम पतयो रयिणाम्' 'हम धनैश्वर्यों के स्वामी बनें. किसी भी प्रकार की दरिद्रता, धन का अभाव मानव जीवन में होना ही नहीं चाहिए. क्योंकि ये जीवन जीने के साधन हैं. साधनों की विपुलता होनी ही चाहिए लेकिन साधनों को साधन ही समझना चाहिए. उसे साध्य समझने की कभी भी भूल नहीं करनी चाहिए. आज की शिक्षा पद्धति, विज्ञान की दृष्टि मानव को साधन और साध्य के अलग होने का ज्ञान नहीं कराती है. यदि आप किसी वाहन में बैठकर कहीं पहुंचना चाहते हैं और पहुंच जाते हैं तो आपको शांति और समाधान मिलता है. वाहन कितना भी अच्छा हो और दो-चार घंटे उसमें अधिक बैठना पडे तो उद्विग्नता का अनुभव होने लगता है क्योंकि केवल गंतव्य तक पहुंचाने के उद्देश्य से तो वाहन ठीक है, यदि वाहन इस शर्त को पूरा नहीं करता है तो वह सुखदायक नहीं हो पाता.

वर्तमान में मानव के जीवन की यही दुर्दशा है. संपदा तो उसके पास विपुल है पर जाना कहां उसे पता नहीं. उसने यह मान रखा है कि खान-पान, भोज-विलास ही जीवन का साध्य है. यह भ्रम ही मानव के समस्त विकारों, दुःखों, अशांति तथा कलह का कारण है.

मानव के पास जो शरीर (पांच ज्ञानेन्द्रियां तथा पांच कर्मेन्द्रियाँ इनसे युक्त) तथा अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) ये दोनो साधनरुप ही हैं. बाह्य जगत् और शरीर, मन इन तीनों साधनों से साध्य जो आत्मा तथा परमात्मा है उस तक पहुंचना है. बिना आत्मानुभूति तथा परमात्मानुभूति के जीवन में तृप्ति तथा आनंद की अनुभूति हो ही नहीं सकती. इस बात को स्पष्ट रूप से प्रत्येक मानव को जान लेना चाहिए.

महर्षि दयानन्द सरस्वतीने अपने अपार पुरुषार्थ और गहन अन्तर्दृष्टि से लोककल्याण हेतु वेदों के मर्म को सरलरूप से हमारे सम्मुख रखा. जीव,

जगत् तथा परमात्मा के सत्यस्वरूप को विशद किया. परमेश्वर साक्षात्कार के लिए तथा भौतिक एवं सामाजिक जीवन को सामंजस्यपूर्ण बनाने के लिए पंच महायज्ञों का विधान किया. जो भी व्यक्ति श्रद्धा भरे हृदय से इन यज्ञों को करता है, निश्चितरूप से उसका आत्मविकास होकर वह अपने जीवन के लक्ष्य को पा लेता है.

स्वामी केवलानन्द सरस्वतीने कई आर्यविद्वानों के ग्रंथों के अवलोकन के पश्चात् साररूप संकलन करने का सफल प्रयास इस पुस्तक में किया है. इसमें विशेषता यह है कि, सभी मंत्रों के पद्यानुवाद हैं. जिससे मंत्र का अर्थ बडी ही सरलता से हृदयगत हो जाता है. इस प्रयास के लिए स्वामीजी धन्यवाद के पात्र हैं. कई अच्छे गीतों का संकलन भी इसमें हैं, जो प्रभु भक्ति के रस में भावविभोर होने की प्रेरणा देते हैं. यह पुस्तक सर्वथा उपादेय होगी ऐसा मेरा विश्वास है.

श्यामलाल स्मारक शिक्षण संस्था, उदगीर के अध्यक्ष प्राचार्य श्री सदाविजयजी आर्य महोदयने इस पुस्तक का डी.टी.पी. का कार्य बडे आनंद के साथ संपन्न कराया है. ऐसे कार्यों में, उनके कारण हमारी संस्था का सदैव सहयोग रहता रहा है. वे साधुवाद के पात्र हैं. बंधु गोपाल सत्पुरेने श्रद्धा भरे हृदय से अल्प समय में इस कार्य को संपन्न किया है तदर्थ वे बधाई के पात्र हैं. अंत में सभी पाठक भाई-बहनों से प्रार्थना करता हूँ कि आप सभी गंभीरता से एक-एक मंत्र के पद्यानुदवाद पर विचार करें और परमात्मा की महिमा का गुणगान करते हुए खूब आनंद लेवें और परमात्मा के महासमुद्र में गोता लगावें. ऐसी भावदशा यह पुस्तक आपके हृदयाकाश में निर्मित करेगी.

स्वामीजीने भूमिका लिखने का अवसर मुझे प्रदान किया. मैं उनका हृदय से आभारी हूँ. साध्य और साधन का भेद समझकर परमात्मारूप साध्य की ओर चले बिना जीवन सर्वथा अधूरा रहेगा. यह पुस्तक आपके जीवन को साध्य की ओर ले जाने में सर्वथा उपयुक्त सिद्ध होगी.

गणेशदेव आर्य

श्यामलाल स्मारक शिक्षण संस्था,

उदगीर - ४१३५१७, फोन - ०२३८५ ५४३५०

❑❑❑

विनम्र आभार

प्रिय बन्धुओ!

इस अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक वैदिक पंचमहायज्ञ पुस्तक के प्रकाशन में श्यामलाल स्मारक शिक्षण संस्था, उदगीर के अध्यक्ष श्रीमान प्राचार्य सदाविजयजी आर्य महोदयने अपनी संस्था की ओर से पुस्तक का कम्प्युटर कम्पोज निःशुल्क कराया है. इसके लिये साधुवाद देता हूँ. साथ ही बन्धु गोपाल सत्पुरे ने भी पुस्तक का कम्पोज आदि कार्यों में श्रद्धाभाव से परिश्रम किया है, इसलिये वे धन्यवाद के भागी हैं.

पुस्तक के प्रूफ करेक्शन का कार्य करके पुस्तक के शुद्ध प्रकाशन में पंडित गणेशदेवजी आर्य महोदयने सक्रिय सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है. इसके लिए मैं अत्यंत आभारी हूँ.

साथ ही इसको ऑफसेट प्रेस में छपवाने में व तैयार कराने के कार्यों में श्रीमान पंडित ज्ञानकुमारजी आर्य मंत्री आर्यसमाज रामनगर लातूरने अपने कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी सहयोग दिया है. इसके लिये आभारी हूँ. विशेष इस वैदिक पंच- महायज्ञ जीवनदायिनी नित्य - कर्म विधि पुस्तक के चार आवरण पृष्ठों का सुन्दर कवर तैयार कराने का संपूर्ण खर्च अपने पिता स्वर्गीय सेठ रिज्जुमल ठाकुरदास कराचीवाले, अहमदनगर की स्मृति में श्रीमान पुरुषोत्तम सेठ एवं बंधुजनोंने किया है, इसके लिये हृदय से धन्यवाद देता हूँ. पुस्तक प्रकाशन योजना में अन्य श्रद्धावान दान दाताओं का परिशिष्ट पृष्ठों में आभार प्रकाशित किया है. आशा है धर्म प्रेमी परिवार इस वैदिक पंचमहायज्ञ पुस्तक के अनुसार नित्य प्रातः सायं प्रभु भक्ति के आनन्द का लाभ उठायेंगे.

शुभेच्छु

स्वामी केवलानन्द सरस्वती, उदगीर.

□□□

...हृदय-उद्गार

पंच महायज्ञ रहस्य -

पंच महायज्ञ ही ईश्वर भक्ति का, आस्तिकता का सर्वांगीण सत्य स्वरुप है. आस्तिकता के दोनों रूपों का सम्यक् समन्वय इनमें ही मिलता है. अतः पंच महायज्ञों का श्रद्धा पूर्वक पालन करना एक आर्य (श्रेष्ठ) परिवार का दैनिक कर्तव्य है. भगवान महर्षि मनु महाराज ने इसके विषय में बतलाया है.

ब्रह्मयज्ञं, देवयज्ञं, पितृयज्ञं च सर्वदा ।

नृयज्ञं, अतिथियज्ञं, यथाशक्ति न हापयेत् ।।

जो मनुष्य (स्त्री-पुरुष) उपरोक्त पञ्चमहायज्ञों के व्यावहारिक रूप को समझ कर उन्हें अपने जीवन का (दिनचर्या) अंग बना लेता है वही सच्चे अर्थों में ईश्वर भक्त है. भारत को आज ऐसे ही ईश्वर भक्तों की आवश्यकता है. इस शुद्ध भावना से प्रेरित होकर यह ईश्वर भक्तों के परिवारों के लिए पंच - महायज्ञ जीवनदायिनी नित्यकर्म - विधि का संकलन सादर समर्पित है.

दैनिक दिनचर्या :

प्रातः ब्रह्मबेला में ४ से ४.३० प्रथम प्रार्थना मंत्रों का पाठ, ईश विनय तथा आत्मचिंतन, ४.३० से ६.०० पर्यंत ताम्र पात्र में रखे जल का पान-उषःपान, शौच, दातुन, स्नान, यौगिक सूक्ष्म व्यायाम, आसन, प्राणायाम कर एकांत स्थान में बैठ उपरोक्त ईश्वर प्रार्थना भजन द्वारा परमात्मा देव का गुणगान तथा चिंतन करें. ६.३० से ७.३० घर में परिवार सहित संध्योपासनादि पंच महायज्ञ का विधान अर्थ विचार पूर्वक नित्य नियमित रूप से श्रद्धाभाव से करें

७.३० से १० बजे तक आवश्यक गृह कार्य भोजन आदि. प्रातः १० बजे से ६.०० बजे तक दैनिक जीविका (नौकरी) उद्योग सत्य एवं प्रामाणिक रूप से इमानदारी से करना चाहिये. सायं ६.०० बजे तक नित्य कृत्य संध्या-अग्निहोत्र

आदि. ८ से ९.३० बजे भोजन, धर्म चर्चा. रात्री शिव संकल्प मंत्रों का पाठ आत्मनिरीक्षण. आज दिनभर के कार्यों में मेरे से कोई अनुचित कार्य तो न हुआ, विचार करें. और उसका मन से परिमार्जन करें.

१० बजे से चार बजे तक गाढनिद्रा के लिये हाथ पाँव मुखादि शीतल जल से धोकर शयन करें, यदि निद्रा न आवे तो मन में प्राणायाम मंत्र का जाप प्रारंभ करें. श्वास लेते हुए और छोडते हुए 'ओ३म् भूः, ओ३म् भुवः, ओ३म् स्वः, ओ३म् महः, ओ३म् जनः, ओ३म् तपः, ओ३म् सत्यम्' मंत्र को मन में ही उच्चारण करते हुए मन को योग निद्रा में बांध लेवें अन्यथा यह चंचल मन सांसारिक कार्यों के, चिंतन में ही स्वप्न अवस्था में भी भटकता रहेगा.

उपरोक्त प्राणायाम मंत्र के जप द्वारा, मन योगनिद्रा में, सुषुप्ति में शांत हो जायगा. प्रातः ठीक चार बजे उठ कर शैया पर बैठ-बैठे अपने हाथों का दर्शन करें. दोनों हाथों को आपस में घर्षण करें. मन में प्राणायाम मंत्र का जाप करते हुए अपने दोनों हाथों में एक प्रकार की विद्युत गर्मी उत्पन्न होने पर अपने आँखों पर, मस्तक पर मालिश करें. यह क्रिया कुछ समय करते रहें. प्रातः अपने हाथों के दर्शन करने का यह भी अभिप्राय है कि हमारे शरीर का अंग हाथ कर्मप्रधान भाग है. इसके द्वारा चतुर्विध पुरुषार्थ करके विद्या दान आदि शुभ कर्म संपन्न किये जाते हैं.

जीवनदायिनी वैदिक संध्या रहस्य

प्रत्येक मनुष्य के लिये प्रातः और सायं संध्या अवश्य करनी चाहिये. इस का नाम संध्या क्यों पडा? और सुबह सायं ही क्यों करना चाहिये? इस बात को समझना अति आवश्यक है. सन्धि शद्ब से संध्या नाम पडा, दो चीजों का मिलान सन्धि कहलाता है.

कर्ममय दिन और विश्राममय रात्री की सन्धि (मिलान) प्रातः सायं होती है, इसलिये इस समय को सन्धि काल कहते हैं. यह तो प्रकृति की सन्धि हुई, हम किसकी सन्धि करते हैं. ऋषियोंने बताया, आत्मा एवं परमआत्मा (ईश्वर) की सन्धि करना ही संध्या है. जिसे ब्रह्मयज्ञ नाम से कहा जाता है. आत्मा और परमात्मा के मिलन से परम आनन्द की प्राप्ति होती है. आत्मा के भीतर ज्ञान का प्रकाश होता है. कुकर्मों से घृणा और शुभ कर्मों की ओर

आत्मा की प्रवृत्ति होती है.

संध्या के वास्तविक गायत्री महामंत्र सहित २१ मंत्र हैं. प्रचलित संध्या पंचमहायज्ञविधि के अनुसार सर्वत्र चल रही है. संस्कार विधि (विक्रम संवत् १९४० की रचना) में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १६ संस्कारों के अन्तर्गत गृहस्थाश्रम प्रकरण में ब्रह्मयज्ञ-संध्या के उपस्थान मंत्रों में एक महत्वपूर्ण मंत्र का विशेष समावेश किया है. "ओ३म् जातवेदसे" यह वेद मंत्र महर्षि द्वारा रचित "आर्याभिविनय" में भी दर्शाया गया है. फिर भी वर्तमान संध्या पुस्तकों में इस महत्वपूर्ण भावपूर्ण मंत्र की उपेक्षा आर्य जगत के साहित्य प्रकाशनों ने अपनायी है. अपवाद के रूप में आर्यसमाज शाहपुरा (राजस्थान) के वयोवृद्ध आर्य विद्वान श्रीमान सोहनलालजी शारदा द्वारा प्रकाशित ब्रह्मयज्ञ (संध्या) पुस्तिका में उपरोक्त वेद मंत्र का उपस्थान मंत्रों में समावेश है. अन्तरराष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान के अध्यक्ष आचार्य वेदभूषणजी द्वारा सम्पादित सन्ध्या पुस्तक में भी यह मंत्र उपस्थान मन्त्रों में है.

एक और विवाद आर्य विद्वानों में चल रहा है. ब्रह्मयज्ञ, ईश्वर प्रार्थना, स्वस्ति वाचन, शांति करण आदि के मंत्रों के प्रारंभ में ओ३म् उच्चारण करना या न करना. इस विषय में अधिकतम आर्य विद्वानों की मान्यता है कि वेद मंत्रों के साथ ओ३म् उच्चारण अवश्य करना चाहिये. यही वेद मंत्र की पहचान है, रामायाण, महाभारत आदि में संस्कृत के श्लोक हैं. मंत्र नाम वेद मंत्रों का ही है.

हमने **"पंच - महायज्ञ जीवनदायिनी नित्यकर्म - विधि"** संस्करण में उपस्थान मंत्रों में जातवेद मंत्र का एवं वेद मंत्रों के साथ उच्चारण में ओ३म् नाम का सर्वत्र विधान किया है, शेष अन्य दैनिक सत्संग नित्यकर्म प्रकाशनों के समान ही संकलन किया है.

विशेषतया संध्या, ईश्वर प्रार्थना, उपासना मंत्र में तथा स्वस्तिवाचन-शांतिकरण मंत्रों के अर्थ-कवितामय रचना स्व.स्वामी भवानीदयालजी वैदिक मिशनरी की रचनाओं को वेद मंत्र के साथ प्रकाशित किया है. इस पंच-महायज्ञ जीवनदायिनी नित्यकर्म - विधि का संकलन स्वर्गीय महात्मा ईश्वरी प्रसादजी प्रेम वानप्रस्थ, मथुरावालों द्वारा नित्यकर्म विधि से तथा स्वर्गीय पं.इन्द्रराजजी आर्य मंत्री

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ द्वारा प्रकाशित "यज्ञपर्व-सुधा" से सभी महत्वपूर्ण संकलन किया है. जो जनकल्याणार्थ प्रकाशित करने के लिए उनके जीवन काल में ही उनकी स्वीकृति प्राप्त है. भजनों का भी संकलन प्रस्तुत है. विभिन्न आर्य कवियों की रचना उन्हीं के नाम से प्रकाशित की है.

संध्या के २० मंत्र हैं. यह मंत्र अर्थ सहित कवितामय कण्ठस्थ कर लेना चाहिये. संध्या के इन २० मंत्रों में प्रथम मंत्र **ओ३म् शन्नो देवी** में मनुष्य जीवन का लक्ष्य बतलाया है मनुष्य जीवन का उद्देश्य है - सुख एवं शांति की प्राप्ति.

शेष १८ मंत्रों में इस सुख और शांति की प्राप्त करने के साधन बतलाये हैं, और वे तीन भागों में दर्शाये गये हैं. पहले भाग में दूसरे मंत्र से ७ वें मंत्र तक छः मंत्रों में बतलाया है कि मनुष्य का अपने प्रति क्या कर्तव्य है, दूसरे भाग में ८ वें मंत्र से १३ तक ६ मंत्रों में मनुष्य का दूसरों के प्रति क्या कर्तव्य है, तीसरे भाग में १४ वें मंत्र से २० तक ७ मंत्रों में मनुष्य का ईश्वर के प्रति क्या कर्तव्य है, बतलाया है.

प्रथम भाग : आपका अपने प्रति कर्तव्य

अपने शरीर अर्थात् इंद्रियों को बलवान बनाना मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है. क्योंकि निर्बल एवं रोगी शरीर से कोई कर्म सरलता पूर्वक नहीं किया जा सकता. इसलिये कहा है **"पहला सुख निरोगी काया"**. संध्या के प्रथम मंत्र "ओ३म् शन्नो देवी" में मनुष्य के जीवन का उद्देश्य सुख-शांति बताया है.

ओ३म् वाक्-वाक मंत्र में अपने इंद्रियों को बलवान बनाने का उपदेश है. साधक भक्ति भाव से परिपूर्ण होकर एक-एक इंद्रिय का जल द्वारा स्पर्श करता है और अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग करके उसको बलवान बनाने की भावना करता है. परंतु जहां बल का सदुपयोग होता है वहाँ दुरुपयोग भी हो सकता है. यदि आप ध्यान पूर्वक चिंतन करें तो पता चलेगा कि संसार में जितने अन्याय और अत्याचार किये जाते हैं वे सब बल के दुरुपयोग से ही किये जाते हैं. अतः वेद मंत्र में **"यशोबलम्"** कहकर उस बल को नियंत्रित कर दिया गया है. इस में कह दिया गया है कि हे प्रभो! मेरी इंद्रियाँ बलवान तो हों परंतु साथ ही साथ वे यशवाली भी हों. इंद्रियाँ यश वाली तभी हो सकती हैं जब उनसे यश वाले अर्थात् शुभ कर्म किये जायं. इंद्रियों से यश वाले काम

तभी किये जा सकते हैं जब वे पवित्र हों. अतः अगले मार्जन मंत्र में **"ओ३म् भूः, ओ३म् भुवः**, में प्राणायाम द्वारा मनुष्य के शरीर और मन को बलवान बनाने की प्रार्थना है.

इससे आगे तीन अघमर्षण मंत्रों में सृष्टि रचना का अति सुंदर वर्णन है. सृष्टि की इस विचित्र रचना को देख कर साधक के मन में इसके रचयिता परमात्मा के प्रति आत्म विश्वास और अटूट श्रद्धा का प्रवाह उमड़ पड़ता है. ईश्वर में सच्ची श्रद्धा होने से साधक का आत्मबल बढ़ता है, निराशा भागती है तथा उसका अहंभाव, घमण्ड, नष्ट हो जाता है.

इस प्रकार से संध्या के इन छः मंत्रों में आपका अपने प्रति क्या कर्तव्य है, यह संक्षेप में निम्न प्रकार बतलाया गया है.

१) अपनी इंद्रियों को बलशाली बनाना.

२) अपनी इंद्रियों को यशोमय बनाना.

३) अपनी इंद्रियों को शुद्ध पवित्र बनाना.

४) प्राणायाम द्वारा अपने शरीर के साथ-साथ मन को पवित्र और बलवान बनाना.

५) इस सृष्टि की अद्भुत विचित्र रचना को देखकर सृष्टि रचयिता परमेश्वर में सच्चा विश्वास और श्रद्धा भाव उत्पन्न करना. जिससे दृढ़ आत्मबल की प्राप्ति होती है.

द्वितीय भाग : मनसा परिक्रमा मंत्र

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है. यह अकेला नहीं रह सकता है. इसे जन्म से ही दूसरे प्राणियों के साथ रहना पड़ता है. इन प्राणियों के साथ इसको किस प्रकार व्यवहार करना चाहिये. यह ओ३म् प्राची दिक् - आदि मनसा परिक्रमा के ६ मंत्रों में बतलाया गया है. इन मंत्रों से सर्व दिशाओं में ईश्वर की सर्वव्यापकता का सच्चा बोध कराके हृदय मंदिर में अटल विश्वास को उत्पन्न कराया गया है. वह प्रभू सम्पूर्ण दिशाओं में रमण करने वाला जगदीश्वर सब ओर से हमारी रक्षा कर रहा है. ऐसे परम रक्षक ईश्वर को बारं बार नमस्कार करके उससे प्रार्थना की गई है कि **"योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं**

द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः".

अर्थात् जो कोई हम से अज्ञान वश द्वेष करता है और जिस किसी से हम भी अल्पज्ञता से द्वेष करते हैं, हे न्यायकारी ईश्वर! आप हमारी द्वेष भावना को नष्ट कर दें, जिनसे न हम किसी से राग-द्वेष कर सकें और न कोई हम से द्वेष करे. यह आपके न्यायरुपी व्यवस्था में धरते हैं.

कितनी सुंदर और भावपूर्ण प्रार्थना है. **"न रहे बाँस न बजे बाँसुरी"** किसी घर परिवार जाति या समाज में झगड़ों का मूल कारण परस्पर का ईर्ष्या-द्वेष ही हुआ करता है. जब हमारा ईर्ष्या-द्वेष ही समाप्त हो जाता है तो सब प्रकार के झगड़े अपने आप समाप्त हो जाते हैं. हृदय में सद्‌भावना का आविर्भाव हो जाता है. परस्पर सहानुभूति के भाव उत्पन्न होते ही प्रेम की गंगा प्रवाहित होने लगती है. इस प्रकार इन मंत्रों में बतलाया गया है कि मनुष्य को दूसरों के साथ किस प्रकार वर्तन करना चाहिये. जिस का सार यह है-

१) **सब दिशाँओं में अर्थात् प्रत्येक स्थान पर ईश्वर की सर्व व्यापकता का अनुभव करना.**

२) **उस सर्व व्यापक परमेश्वर को ही अपना परम रक्षक पालक समझना चाहिये.**

३) **सब प्राणियों को उसी प्रभु के अमृत पुत्र समझकर द्वेष भावना को नष्ट करके भ्रातृभाव उत्पन्न करना.**

तृतीय भाग : आपका ईश्वर के प्रति कर्तव्य

ये **उपस्थान मंत्र** कहलाते हैं. उपस्थान का अर्थ है समीप बैठना. ईश्वर के समीप बैठना ही मनुष्य का परम कर्तव्य है. मनुष्य इस अवस्था में पहुंच कर संसार के समस्त दुःखों से मुक्त हो जाता है. वह सर्वत्र उस परम प्रभु की ज्योति को देखता है. कण-कण में उस की महत्ता का अनुभव करता है. उस समय परम पिता परमात्मा के गुण एक-एक करके उसके सामने आते हैं, और तब अपने में प्रभु को और प्रभु में अपने को ओत-प्रोत अनुभव करता है. उसके आनन्द का पारावार नहीं रहता है. साधक का मस्तक प्रभु के चरणों

में झुक जाता है, और अंत में वह कह उठता है - **'ओ३म् नमः शम्भवाय च'** हे प्रभो! आप कल्याण स्वरुप हैं, आप के दिव्य स्वरुप को नमस्कार हो. उस समय हृदय के पट खुल जाते हैं और वह अनुभव करने लगता है कि प्रभु तो सदैव सबके ही कल्याण करने में रहते हैं. ये जो दुःख आते हैं उनको तो हम स्वयं राग-द्वेष में पडकर उत्पन्न करते हैं.

इस तरह भक्त को अपने कर्तव्य-अकर्तव्य का पूर्ण ज्ञान हो जाता है और वह अपने जीवन का इस प्रकार का मार्ग निश्चित कर लेता है. जिससे वह इस संसार सागर को पार करके अंत में अमृत रूप मोक्ष को भी प्राप्त कर लेता है.

संध्या का समय और स्थान

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्
धिया विप्रो अजायत ।।यजुर्वेद।। १६।१५

संध्या केवल दो समय अर्थात् प्रातः और सांय काल किया करें. प्रातः काल पूर्व दिशा की और मुख करके औरं सायंकाल पश्चिम दिशा की ओर मुख कर के अर्थात् सूर्याभिमुख रहकर (एकान्त स्थान में) संध्या करनी चाहिये. क्योंकि सूर्य की किरणें हृदय रोगों के लिये अत्यंत हितकारी है. अथवा जिधर का शुद्ध वायु हो उस ओर मुख कर सकते हैं. यदि नदी, नहर, पहाड जंगल आदि तट पर संध्या करनी हो तों किनारे की ओर मुख करके सिद्धासन, पद्मासन लगा कर शरीर को सीधा करके बैठना चाहिये.

(स्वामी दयानन्द सरस्वती)

विधि : पहले जलादि से शरीर की बाह्य शुद्धि और राग-द्वेष असत्य आदि के त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिये. फिर आत्मा और मन को सुस्थिर करने के लिये कम से कम तीन प्राणायाम करके मन में ओ३म् का जाप करते जायें. पुनः निम्न लिखित गायत्री महामंत्र का जप करते हुए शिखा-बंधन करना चाहिये. इससे यह अभिप्राय है कि बिखरे बाल संध्या में बाधक न हों और मस्तिष्क की बिखरी भावनायें एकत्रित हों.

❑❑❑

अथ संध्योपासनाविधि :

गायत्री मन्त्र :

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम् ।

भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

(यजुर्वेद - अ. ३६ मं ३)

अर्थ : सच्चिदानन्द सकल जगत् उत्पादक प्रकाशकों का भी प्रकाशक परमात्मा के श्रेष्ठतम पापनाशक तेज का हम ध्यान करते हैं. वह परमेश्वर हमारी बुद्धि को उत्तम प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कर्मों से छुडाकर अच्छे कर्मों में प्रवृत्त करे.

आचमन मन्त्र :

जल पात्र से दाहिने हाथ की हथेली में जल लेकर निम्न लिखित मंत्र को एक बार बोल कर तीन आचमन करें. इससे कण्ठंस्थ कफ-पित्त आदि की निवृति होती है.

ओ३म् शन्नो देवी रभिष्टय ।

आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥

(यजुर्वेद ३६/१२)

सर्व व्यापक, सबका प्रकाशक और आनन्द देनेवाला परमेश्वर मनोवाञ्छित सुख और पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिये हमारा कल्याण करे, तथा हम पर सुख की सर्वदा वृष्टि करे.

कविता भाव :

देवी स्वरुप भगवन, पूर्ण अभिष्ट कीजे ।

यह नीर हो सुधामय, कल्याण दान दीजे ॥

इंद्रियस्पर्श मन्त्र :

फिर हाथ धोकर बायें हाथ की हथेली में जल लेकर सीधे हाथ की मध्यमा और अनामिका (तीसरी और चौथी) अंगुलियों से जल स्पर्श करके पहले दाहिने और फिर बांये अंग को निम्न मंत्र से स्पर्श करें.

ओ३म् वाक् वाक् - इससे होंठ

ओ३म् प्राणः प्राणः - इससे नासिका

ओ३म् चक्षुश्चक्षु - इससे आंख

ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम् - इससे कान

ओ३म् नाभिः - इससे नाभि

ओ३म् हृदयम् - इससे हृदय

ओ३म् कण्ठः - इससे कण्ठ

ओ३म् शिरः - इससे मस्तक

ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम् - इससे दोनों भुजायें

ओ३म् करतल करपृष्टे - इससे दोनों हाथ

भावार्थ : उपरोक्त मंत्रों में अपने प्यारे प्रभु की गोद में बैठा हुआ भक्त प्रतिज्ञा करता है कि वह प्रभु के मन मंदिर रूप शरीर के किसी अंग से कोई ऐसा पाप कर्म नहीं करेगा जिससे वह निर्बल हो. आत्म-निरीक्षण द्वारा वह अपने प्रत्येक अंग की जाँच पड़ताल करता है. और प्रभु से बल और उसके द्वारा यश प्राप्ति की प्रार्थना करता है.

कविता भावार्थ :

तन-मन वचन से होगें, हम शुद्ध कर्मचारी ।
दुष्कर्म से बचेगी ये इन्द्रियाँ सब हमारी ॥
वाणी विशुद्ध होगी, प्रिय प्राण शक्तिशाली ।
होगी हमारी आँखें, शुभ दिव्य ज्योतिवाली ॥
ये कान ज्ञान भूषित, नाभि महत् सुखकारी ।
होगा हृदय दयामय ! निर्मल नृधर्म धारी ॥
भगवान! तेरी गाथा, गायेगा कण्ठ मेरा ।
सिर में सदा घूमेगा, गौरव अनन्त तेरा ॥
होगें ये हाथ मेरे, यश-ओज-तेजधारी ।
मेरी हथेलियाँ यें होंगी, शुभ पवित्र प्यारी ॥

मार्जन मन्त्र :

फिर उसी प्रकार बाई हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की उन्ही दोनों अंगुलियों से शरीर के अंगो पर निम्न मंत्रों से मार्जन करें अर्थात् जल छिड़कें.

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि ।
ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः ।
ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे ।
ओ३म् महः पुनातु हृदये ।
ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम् ।
और तपः पुनातु पादयोः ।
ओ३म् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि ।
ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ।

इन मंत्रों द्वारा भक्त अपने भगवान के विभिन्न गुणों को अपने विभिन्न अंगों में बसाने के लिये संकल्पशील होता है. इस प्रकार अपने सब अंगों की पवित्रता सम्पादन कर वह प्रभु मिलन की तैयारी करता है.

कविता भाव :

प्राणों के प्राण प्रभुवर! मस्तक पवित्र कर दो ।
पावन पिता दयाकर! आंखों में ज्योति भर दो ।
आनन्दमय अधिश्वर! हम को सुकण्ठ दीजे ।
मेरे हृदय-सदन में, सर्वेश बास कीजे ।
जग के पिता! हमारी हो नाभि निर्विकारी ।
पद भी पवित्र होवे, हे ज्ञान-ज्योतिधारी ।
पुनि-पुनि पवित्र सिर हो, हे सत्य रूप स्वामी ।
सर्वांग शुद्ध होवे, व्यापक विभो! नमामि

प्राणायाम मन्त्र :

प्रथम तीन बन्ध लगावे - "मूलबन्ध, उड्डियान बन्ध, "जालन्धर बन्ध, फिर ध्यानासन में सीधे बैठकर दोनों हाथों की अधखुली-सी मुठ्ठियों की पीठ घुटनों के उपर रखकर भीतर श्वास को बलपूर्वक बाहर निकाल कर जितनी देर हो आसानी से रोक कर रखें. इसी अवस्था में मन में प्राणायाम मंत्र का जाप करें. फिर धीरे-धीरे भीतर श्वास भरें. मंत्र का जाप करते रहें. जितने देर रोक सकें रोक कर रखें. फिर श्वास को बाहर निकालें. यह एक प्राणायाम हुआ, ऐसे तीन प्राणायाम का अभ्यास होने पर धीरे-धीरे इक्कीस प्राणायाम कर सकते हैं.

ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म् महः।

ओ३म् जनः। ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम्।।

(प्राणायाम के कई प्रकार हैं. मूलबन्ध, उड्डियान बन्ध, जालन्धर बन्ध ये विधियाँ गुरु से सीखें.)

कविता भाव :

नमो ओ३म् आनन्द शान्ति प्रदाता।
नमो भूः प्राणों के हो प्राणदाता ॥
नमो हे भुवः दुःख हर लेनेवाले ।
नमो स्वः सुखी भक्त आश्रय तुम्हारे ।
नमो हे महः ब्रह्म आदित्य रूपं ।
नमो हे जनः सृष्टिकर्ता अनुपम ॥
नमो हे तपः दुःख नाशक पिता हो ।
नमो सत्य सर्वज्ञ सब के सखा हो ।
सभी हम प्रभो! अब शरण आपकी हैं ।
हुई दूर बाधा जो भव ताप की है ॥

अघमर्षण मंत्र :

तत्पश्चात् सृष्टि कर्ता परमेश्वर और सृष्टि क्रम का विचार नीचे मंत्रों से करें और जगदीश्वर को सर्वव्यापक न्यायकारी सब जीवों के कर्मों का द्दष्टा ऐसा निश्चय मान के पाप कर्मों में अपने आत्मा और मन को कभी न जाने देवे, किंतु सदा धर्म पूर्वक कर्मों में वर्तमान रखे -

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभिद्धातपसोऽ ध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥१॥

ओ३म् समुद्रादर्णवाधि संवत्सरोऽजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२॥

ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।।३।।

ऋग्वेद १०/१९०/१-३

कविता भावार्थ :

ऋत सत्य से ही तूने, संसार को बनाया ।
तेरा ही दिव्य कोशल है, सिन्धु ने लरवाया ।।
पहले के कल्प जैसे, रवि चंद्र को रचाया ।
दिन रात पक्ष-सम्वत् में काल को सजाया ।।
द्यौ-अंतरिक्ष-धरणी, सब नेम पर टिकाया ।
तू रम रहा सभी में, तुझ में सभी समाया ।।२।।

अघमर्षण विधि के पश्चात् यहाँ पुनः "शन्नो देवी"
इस मंत्र को एक बार बोल कर तीन बार आचमन करें.

मनसा - परिक्रमा मन्त्र :

नीचे लिखे मंत्रों से सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति प्रार्थना करें. इन छः मंत्रों से परमपिता ओ३म् की सत्ता को सब दिग्-दिगन्तरों में अनुभव करते हुए सम्पूर्ण विश्व के साथ द्वेष-भावना को नष्ट करके मैत्री-भाव स्थापित कर निर्भय निःशंक उत्साही मन से आनन्दित और पुरुषार्थी रहें.

**ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः।
तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो
अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।१।।**

कविता भाव :

हे ज्ञानमय प्रकाशक ! बंधन - विहीन प्यारा
प्राची में रम रहा तू, रक्षक पिता हमारा
रवि-रश्मियों से जीवन पोषण विकास पाता।
अज्ञान के अंधेरे में तू ही प्रभा दिखाता।
हम बार-बार भगवन। करते तुम्हें नमस्ते ।
जो द्वेष हो परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते ॥१॥

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।२।

कविता भावार्थ :

तू इन्द्र रूप भगवन! दक्षिण में भी दिखाता।
जड़ जीव-जंतुओं से तू ही हमें बचाता।
वैदिक सुधा पिलाता तू ज्ञानियों के द्वारा।
तुझ से लगन लगी है सर्वस्व तू हमारा ॥
हम बार-बार स्वामिन! करते तुम्हे नमस्ते ।
जो द्वेष हो परस्पर वह तेरे न्याय हस्ते ॥२॥

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।३।।

कविता भावार्थ

पश्चिम में वास तेरा, तू ही वरुण कहाता ।
विषधारियों के भय से, हमको सदा बचाता ॥
सब प्राणियों का पोषण करता है अन्न द्वारा ।
दुःख में तू ही है साथी, सुख में तू ही सहारा ॥
हम बार-बार भगवन! करते तुम्हें नमस्ते ।
जो द्वेष हो परस्पर वह तेरे न्याय हस्ते ॥३॥

ओ३म् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिःस्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो ३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वा जम्भे दध्मः ।।४।।

कविभा भावार्थ

हे सोम रूप स्वामी! उतर दिशा निहारा ।
तेरी उपासना है, भव सिन्धु से सहारा ॥
विद्युत बना के तूने, भू-लोक जगमगाया ।
जीवों में उसकी सत्ता, संचार कर सजाया ॥
हम बार-बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते ।
जो राग-द्वेष परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते ॥४॥

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो
अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जध्मे दध्मः ॥५॥

कविता भावार्थ :

हे विष्णु सर्वव्यापी! दृढता हमें सिखाओ ।
कर्तव्य में निरंतर रह, हंसना हमें बताओ ॥
रक्षण तू कर रहा है, संतानवत् हमारा ।
दुःख-सुख सभी समय में, साथी सखा हमारा ॥
हम बार-बार भगवन, करते तुम्हें नमस्ते ।
यदि द्वेष भावना हो, वह तेरे न्याय हस्ते ॥५॥

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो
अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥

कविता भावार्थ :

अन्तर दृगों से भगवन्! उपर भी दृष्टी आते ।
ऋतु सिद्ध वृष्टि होती, सब सृष्टि को चलाते ॥

भौतिक विभूतियाँ हैं, तेरी प्रगट निशानी ।
कैसे कहेगी वाणी, ऐसी प्रगट निशानी ।
हम बार-बार प्रभुवर! करते तुझे नमस्ते ।
जो द्वेषभाव हो परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते ॥६॥

उपस्थान मन्त्र :

तत्पश्चात् परमात्मा का उपस्थान अर्थात् परमेश्वर के निकट मैं और मेरे निकट परमात्मा है ऐसी भावना बुद्धि करके मंत्र पाठ करें.

ओ३म् जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः (१)

(ऋग्वेद मं.१ सू ९९ मं १)

कविता भावार्थ :

हे जातवेद प्रभुवर, सुख शांति प्रदान कर दो ।
संसार दुःख सागर से हमें पार कर दो ॥
माया तुम्हारी भगवन् अद्‌भुत विचित्र है यह ।
कर छिन्न भिन्न इसको, वैदिक प्रकाश कर दो ।
पाकर के दीनबंधु, केवल तेरा सहारा ।
वैदिक धर्म - ध्वजा, लहराये विश्व में हमारा ॥१॥

विशेष : संस्कार विधि गृहस्थ प्रकरण में ब्रह्मयज्ञ - सन्ध्या में उपस्थान

मंत्रान्तर्गत यह मंत्र महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने बढ़ाया है और मंत्रों का क्रम भी बदला है । (संस्कारविधि अनुसार है)

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने : । आ प्रा
द्यावा पृथिवी अंतरिक्षꣳ सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा॥२॥

कविता भावार्थ :

अद्भुत स्वरुप तेरा, तेरी अनुमप कहानी ।
है आप में अवस्थित द्यौ अंतरिक्ष अवनी ।
तेरी कृपा से प्रभुवर । सच्चा प्रकाश पाया ।
श्रद्धा की अंजलि ले तेरे समीप आया ॥२॥

ओ३म् उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्य्यम् ॥३॥

(यजु.अ.३३ । मं. ३१)

कविता भावार्थ :

इन बाह्य चक्षुओं से वह दृष्टि में न आया ।
चाहा पता लगाना उसका पता न पाया ॥
हो कर निराश जब मैं घर लौटा आ रहा था ।
सृष्टि का जर्रा-जर्रा प्रभु-गान गा रहा था।
दर्शन प्रभु के करके जब मन मेरा न माना ।
भर कर खुशी में उसने, गाया नया तराना ।

जीवन में ज्योति, प्राणों में प्रेरणा तुम्हारी हो ।
मन में मनन, वदन में नव चेतना तुम्हारी हो ॥३॥

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥४॥

(यजुर्वेद - अ ३४ मं १४)

कविता भावार्थ :

रवि-रश्मि के रमैया! पावन प्रभा दिखाओ ।
अज्ञान की तमिस्र भूलोक से मिटाओ ॥
देवों के देव! दिन-दिन हो दिव्य दृष्टि प्यारी ।
श्रुतिगान को न भूलें, रसना कभी हमारी ॥

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतꣳ श्रृणुयाम शरद शतं, प्रब्रवाम शरदः शतमऽ दीनाः स्याम शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात् ॥५॥

कविता भावार्थ :

जगदीश! यह विनय है हम वीरवर कहावे ।
होकर शतायु स्वामिन्! तुम से लगन लगावे ॥
सौ साल तक हमारी, आँखे हों ज्योतिधारी ।
कानो में शद्ब सम्यक् सुनने की शक्ति सारी ॥
वाणी विराट प्रभू की, बिरुदावली, सुनावें ।
परतंत्रता है पातक स्वातंत्र्य मंत्र गावें ॥५॥

तदनन्तर नीचे लिखे गायत्री मंत्र (सावित्री गुरुमंत्र) का यथावकाश अर्थ विचार पूर्वक मन से अधिकाधिक जाप करें. गायत्री मंत्र शुद्ध उच्चारण अर्थज्ञान और तदनुसार आचरण करें.

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम् ।

भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

(यजुर्वेद ३६/३)

कविता भावार्थ :

प्राण प्रदाता संकट त्राता, हे सुखदाता ओ३म्-ओ३म् ।

सविता माता पिता वरेण्यं, भगवन भ्राता ओ३म्-ओ३म् ।

तेरा शुद्ध स्वरुप धरें हम, धारण दाता ओ३म्-ओ३म् ।

प्रज्ञा प्रेरित कर सुकर्म में, विश्व विधाता ओ३म्-ओ३म् ।

(स्वामी भवानीदयालजी, वैदिक मिशनरी)

समर्पण :

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि -

कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ॥

अर्थ : हे परमेश्वर दयानिधे! आपकी कृपा, अनुग्रह से जप आदि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें.

नमस्कार मन्त्र :

इस के पीछे अंत में निम्न लिखित मंत्र द्वारा परम पिता परमात्मा को विनम्र भाव से नमस्कार करें.

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च ।
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च ।
नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

(यजुर्वेद अ ६ मं ४)

हे मान्यवर महेश्वर, मंगल करो हमारा ।
पावन प्रकाश पायें, परमार्थ पुण्य द्वारा ॥
हे शान्ति रुप स्वामी! मन शांत हो हमारा ।
बहती रहे हृदय में, अविरल सुज्ञान धारा ॥
शिव इष्ट देव मेरे, तुम को नमन करें हम ।
वेदों के ज्ञान द्वारा, जीवन सफल करें हम ॥

(स्वामी भवानीदयालजी द्वारा)

(इति सन्ध्योपासना विधि)

देवयज्ञ रहस्य

यज्ञ का साधारण अर्थ है हवन करना. परंतु व्यापक अर्थों में प्रत्येक शुभ कर्म जो बिना स्वार्थ परोपकार भाव से किया जाता है, यज्ञ कहलाता है. जैसे जल कुँआ बनवाना, धर्मशाला, विद्यालय बनवाना, औषधालय खोलना इत्यादि.

यज्ञ (हवन) में भी यही भावना है. इसे करनेवाला घी, सामग्री, आदि केवल अपने ही उपयोग में न लेकर प्रज्वलित अग्नि में घृत, सामग्री की आहुति इस भावना से देता है कि आस-पास की दुर्गन्ध दूर हो, सुगन्धि फैले, रोग-व्याधि का नाश हो, प्राणिमात्र के स्वास्थ्य की वृद्धि हो.

यज्ञ कर्ता के अंदर जहां शुद्धि की भावना रहती है वहाँ इस यज्ञ से उसके अंदर परोपकार की भावना में वृद्धि होती है. वह देखता है कि यह संसार ही यज्ञमय है. परमपिता परमेश्वर भी इस सृष्टि के संचालन द्वारा एक महान यज्ञ ही कर रहे हैं. प्रातः काल उदय होता हुआ सूर्य देव अपने प्रकाश तथा उष्णता के द्वारा यज्ञ ही तो कर रहा है. वायु प्राणियों को जीवन दान देकर यज्ञ कर रहा है. इसी प्रकार पृथ्वी, अग्नि, जल आदि सभी पदार्थ उस विश्व-विधाता की यज्ञमय भावना को ही प्रकाशित कर रहे हैं.

प्रातः और सायं यज्ञ करते हुए याज्ञिक देखता है कि यज्ञ में काम आने वाली समिधाओं तथा घी-सामग्रीने अपने आपको परोपकार में लगा दिया, अपने आप को जला दिया. क्या ये नष्ट हो गई? नहीं, उनमें से प्रकाश निकला. चारों तरफ सुगन्धि फैली. इसी प्रकार से मनुष्य अपने सत्कर्मों को, सर्वस्व को परोपकार में होम देता है, तब उसके जीवन में यश रूपी प्रकाश फैलता है. जो असंख्य मनुष्यों के जीवन-पथ को उन्नत बनाने में सहायक होता है. उसके जीवन की कीर्ति रूपी सुगन्धि दिगदिगन्तरों को सुगन्धित करती हुई न जाने कितनी आत्माओं को सुख शांति प्रदान करती है. जिन महान आत्माओं ने अपना जीवन यज्ञमय बना लिया वे अमर हो गये.

महर्षि दयानन्द और अनेक आत्मदर्शी इस युग में इसके प्रमाण हैं. हम भी

अपना जीवन यज्ञमय बना कर जीवन को आदर्शमय बनावें. यही प्रार्थना है.

अग्निहोत्र-देवयज्ञ : प्रातः सायं दोनों सन्धि बेला में (दिन और रात के मिलने के समय) सन्ध्योपासना करनी योग्य है, उसी प्रकार दोनों समय अग्निहोत्र भी नित्य प्रति किया करें. ब्रह्म यज्ञ (संध्या) देवयज्ञ (हवन) सपरिवार करना चाहिये.

प्रातःकाल पहले संध्या और सायंकाल पहले हवन करना चाहिये. अर्थात् सूर्योदय के उपरान्त और सायं सूर्यास्त के पहले अग्निहोत्र करें.

यज्ञोपवीत-धारण मंत्र :

ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

भावार्थ : वैदिक कर्म में अधिकारी बनने के लिये इस ब्रह्मसूत्र को जो परमात्मा के ज्ञान प्राप्ति का सूचक है, शुद्ध ज्ञान की सूचना करनेवाला है, जो ईश्वर से स्वभाव सिद्ध उद्दिष्ट है, पूर्वकाल से चला आता है, आयु के लिये विशेष हितकारी है. ऐसे ब्रह्मसूत्र को मैं धारण करता हूँ.

ईश्वर करे यह निर्मलता का बोधक यज्ञोपवीत बल और तेज देनेवाला हो.

ओ३म् यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।

हे ब्रह्मसूत्र! तू यज्ञोपवीत है। तुझे यज्ञ कार्य के लिये ही मैं धारण करता हूँ. ।
मैं आज स्वयं को यज्ञोपवीत से बाँधता हूँ.

अग्निहोत्र-देवयज्ञ :

जैसे प्रातः सायं दोनों सन्धि बेला में (दिन और रात के मिलने के समय)

समस्त भूगोल में यज्ञ आदि विधि की एकरूपता के विचार से महर्षि दयानंद प्रतिपादित संस्कार विधि में जो यज्ञ आदि पद्धति का निर्देश किया है उसके अनुसार निम्न बातें ध्यान देने योग्य हैं.

१) प्रथम आचमन तथा अंग-स्पर्श मंत्रों के बाद ही ईश्वर प्रार्थना मंत्रों का पाठ करें.

२) प्रार्थना मंत्रों का पाठ केवल एक सज्जन विद्वान अर्थ सहित करें. समय का अभाव हो तो अर्थ कवितामय बोला जा सकता है.

३) 'इदन्न मम' के द्वारा जल पात्र में घृत बिन्दु न डालें ।

४) 'वसो पवित्र मसि' मंत्र के द्वारा अंत में घृत की धारा न छोडें.

५) सूर्यो ज्योति से साकल्य (हवन सामग्री) की आहुतियाँ प्रारम्भ करके अंत तक दी जाएँ ।

अथ ऋत्विग्वरणम्

यजमानोक्तिः - ओमावसोः सदनेसीद ।

ऋत्विगुक्तिः - ओ३म् सीदामि ।

यजमानोक्तिः (संकल्प वचनम्) :

ओ३म् तत्सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे अमुक संवत्सरे... अयने... ऋतौ... मासे... पक्षे... तिथौ... दिवसे... नक्षत्रे... लग्ने... मुहूर्ते... अत्र अहम्... विधिवत् कर्मकरणाय भवन्तं वृणे.

ऋत्विगुक्ति : ओ३म् वृतोस्मि

अथ देवयज्ञ विधिः

आचमन मन्त्र :

विधि : प्रथम शांत चित्त होकर शुद्ध आसन पर बैठे और निर्मल जल लेकर इन तीन मंत्रों से तीन बार आचमन करें.

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।।१।।

हे अमृत! तू नीचे का बिछौना है, यह कथन सत्य है ।

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।।२।।

हे अमृत! तू ऊपर का ओढ़ना है, यह कथन सत्य व शोभायुक्त है ।

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयी श्रीः श्रयतां स्वाहा ।।३।।

मु में सत्य, यश और श्री, आश्रय रूप में स्थित हों, यह कथन भी सत्य और शोभायुक्त है ।।३।।

अङ्ग स्पर्श मन्त्र :

बायीं हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से अंग का स्पर्श करें.

१) **ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्तु ।।१।।** इस मंत्र से मुख

परमात्मा! मेरी वाणी बलवती हो ।

२) **ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।।२।।** इससे नासिका

भगवान! मेरी नासिका में प्राणशक्ति बनी रहे ।

३) **ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।।३।।** इससे आँख

भगवान! मेरी आखें दिव्य ज्योतिवाली हों ।

४) **ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥४॥** इससे कान

जगत्पिता! मेरे कानों में सुनने की शक्ति बनी रहे ।

५) **ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥५॥** इससे हाथ

प्रभो! मेरी बाहों में बल का संचार हो ।

६) **ओ३म् ऊर्वोम ओजोऽस्तु ॥६॥** इससे जंघा

परमात्मा! मेरी दोनों जाँघों में सामर्थ्य हो ।

७) **ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥७॥**

प्रभु! मेरे शरीर के सारे अंग स्वस्थ, सबल और संयमी हों ।

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्राः

विधि : अब संध्या में बतलाई गई विधि से सीधा बैठकर एकाग्र चित्त एवं ध्यान-मग्न हो. नीचे लिखे मंत्रों का पाठ एक विद्वान अथवा योग्य सज्जन अर्थ सहित अति श्रद्धा और भक्ति के साथ करें और सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें और विचार करें.

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्न आसुव॥१॥

यजु : 30/3

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरुप विधाता है ।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, जो तेरे समीप आता है ॥
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से, हम को नाथ बचा लेना ।
मंगलमय गुण-कर्म पदारथ प्रेम सिन्धु हम को देना ॥१॥

भावार्थ : हे सकल जगत् के उत्पतिकर्ता समग्र एश्वर्ययुक्त शुद्ध स्वरुप सबके सुखदाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये. जो कल्याणकारी गुण कर्म और पदार्थ हैं वह सब हमको प्राप्त कराइये ॥१॥

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

(यजुः १३/४)

तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन, सुखस्वरुप शुभ त्राता है ।
सूर्य-चंद्र लोकादिक को तू रचता और टिकाता है ।
पहले था अब भी तू ही है घट-घट में व्यापक स्वामी ।
योग भक्ति तप द्वारा तुझ को पावें हम अंतर्यामी ॥२॥

भावार्थ : जो स्व प्रकाश स्वरुप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य-चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतन स्वरुप था. जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, जो इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुख स्वरुप शुद्ध परमात्मा के लिये ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें ॥२॥ (द.)

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

(म./यजु. २५/१३)

तू ही आत्मज्ञान बलदाता सुयश विज्ञ जन गाते हैं ।
तेरी चरण-शरण में आकर भव सागर तर जाते हैं ।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे विसराने में ।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु-तुझ से लगन लगाने में ॥३॥

भावार्थ : जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा. जिसकी सब विद्वान लोग उपासना करते हैं और जिस का प्रत्यक्ष सत्यस्वरुप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं. जिसका आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है, जिसका न मानता अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरुप सकलज्ञान के देनेहारे परमात्मा की प्राप्ति के लिये आत्मा और अंतकरण से भक्ति अर्थात् उसकी आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें ॥३॥ (द.)

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥
(यजुः २५।११)

तूने अपनी अनुपम माया से, जग-ज्योति जगाई है ।
मनुज और पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रगटाई है ।
अपने हिय-सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं ।
भक्ति-भाव की भेंटें लेकर, तव चरणों में आते हैं ॥४॥

भावार्थ : जो प्राणवाले और अप्राणिरुप जगत की अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है. जो इस मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है. हम लोग उस सुखस्वरुप सकलैश्वर्य के देनेहारे परमात्मा के लिये अपनी सकल उत्तम सामग्री से विशेष भक्ति करें ॥४॥

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।

योऽन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।५।।

(यजुः ३२/६)

तारे-रवि चंद्रादिक रचकर निज प्रकाश चमकाया है ।

धरणी को धारण कर तूने, कौशल अलख लखाया है ।।

तू ही विश्व विधाता पोषक, तेरा ही हम ध्यान धरें ।

शुद्ध भाव से भगवन । तेरे भजनामृत का पान करें ।।

भावार्थ : भावार्थ-जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाववाले सूर्यादि और भूमि को धारण किया है, जिस जगदीश्वरने सुख को धारण और जिस ईश्वर ने दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं वैसे सब लोकों को निर्माण करता है और भ्रमण करता है. हम लोग उस सुखदायक कामना करने योग्य परमब्रह्म की प्राप्ति के लिये सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें ॥५॥(द.)

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।६।।

ऋ.१०/१२१/१०

तुझ से भिन्न न कोई जग में, सब में तू ही समाया है ।

जड़-चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है ।

हे सर्वोपरि विभो! विश्व का तूने साज सजाया है ।

विद्या-धन भरपूर दीजिये यही भक्त को भाया है ॥६॥

भावार्थ : हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा! आप से भिन्न दूसरा कोई इन सब उत्पन्न हुए, जड़ चेतनादि को नहीं तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं. जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग आपका आश्रय लेवें और वांछा करें, उस-उस की कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें ॥६॥ (द.)

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

(यजु. अ.३२/१०)

तू गुरु है प्रजेश भी तू है, पाप-पुण्य फल देता है ।
तू ही सखा बंधु मम तू ही, तुझ से ही सब नाता है ।
भक्तों को इस भव बंधन से, तू ही मुक्त कराता है ।
तू है अज, अद्वैत महाप्रभु, सर्व काल का ज्ञाता है ॥७॥

भावार्थ : हे मनुष्यो! वह परमात्मा अपने लोगों को भ्राता के समान सुखदाता, सकल जगत का उत्पादक, वह सब कर्मों को पूर्ण करने हारा, सम्पूर्ण लोक मात्र और नाम स्थान जन्मों को जानता है और जिस संसारिक सुख-दुःख से रहित नित्यानन्दयुक्त मोक्षस्वरुप धारण करनेहारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं वही परमात्मा अपना गुरु आचार्य राजा और न्यायाधीश है, अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें ॥७॥ (द.)

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूमिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

(यजुः ४०/१६)

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभु, सब का सिरजनहार तु ही ।
रसना निशि-दिन रटे तुम्ही को, मन में बसना सदा तुही ॥
कुटिल पाप से हमें बचाते रहना, हर दम दया निधान ।
अपने भक्त जनों को भगवन! दीजे यही विशद वरदान ॥८॥

भावार्थ : हे स्वप्रकाश ज्ञान स्वरुप सब जगत के प्रकाश करनेहारे, सकल सुखदाता परमेश्वर, आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं. कृपा करके हम लोगों को विज्ञान राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उतम कर्म प्राप्त कराइये और हमसे कुटिलता युक्त पाप रूप कर्म को दूर कीजिये. इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें ॥८॥

॥ इति ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्राः ॥

अथ स्वस्तिवाचनम्

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।

होतारं रत्नधातमम् ॥१॥ ऋ. १।१।१॥

विश्व विधाता के चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाऊँ ।

जिसने यह ब्रह्मांड सँवारा उसकी गाथा गाऊँ ॥१॥

ओ३म् स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।

सचस्वा नः स्वस्तये ॥२॥ ऋ. १।१।९॥

जैसे सुत को शिक्षा देकर पिता सुजान बनाता ।

वैसे जगत पिता जीवों को, ज्ञान पीयूष पिलाता ॥२॥

ओ३म् स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।

स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः, स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥३॥

ऋ. १।५१।११॥

विद्युत, पवन, मेघ, नभ, धरणी मोदमयी भयहारी ।

विद्वानों की वाणी होवे, सुखद सर्व हितकारी ॥३॥

ओ३म् स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः॥४॥
(ऋ. ५/५१/१२॥)

अन्तरिक्ष में शशि शुभ्र, शीतल ज्योत्स्ना फैलाता ।
स्वस्ति समन्वित स्नेह सदा, सृष्टि सौंदर्य बढ़ाता ॥४॥

ओ३म् विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥५॥
(ऋ. ५/५१/१३॥)

जनता की कल्याण-कामना से यह यज्ञ रचाया ।
विश्वदेव के चरणों में अपना सर्वस्व चढाया ॥५॥

ओ३म् स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥६॥
(ऋ. ५/५१/१४॥)

मारुत हो मन भावन विद्युत विनयशील बन जावे ।
भौतिक वस्तु मानवी जीवन में उल्लास बढ़ावे ॥६॥

ओ३म् स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ॥७॥
(ऋ. ५/५१/१५॥)

नभ-मंडल में सूर्य चंद्र पावन प्रकाश फैलाते ।
ज्ञानवान् सत्संग जनित कल्याण-मार्ग पर जाते ॥७॥

ओ३म् ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
तेनो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥
ऋ. ७।३५।१५॥

यज्ञव्रती विद्वान सर्वदा कर्म तत्व बतलावें ।
अन्तस्तल में ज्योति जगाकर श्रेय मार्ग दिखलावे ॥८॥

ओ३म् येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ॥९॥
(ऋ. १०।६३।३)

ऋतु अनुकूल मेघ बरसे दुःखद दुष्काल न आवे ।
सुजला सुफला मातृभूमि हो, मधुमय क्षीर पिलावे ॥

ओ३म् नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्दवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये॥१०॥

(ऋ. १०/६३/४)

जिसने योग-त्याग द्वारा ब्रह्म-तत्व को पाया ।
उसने मानव-मंडल को मुद मङ्गल मार्ग बताया ॥१०॥

ओ३म् सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिहृवृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
तां आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये॥११॥

ऋ.१०/६३/१५)

ज्ञानी, यज्ञ-योग की महिमा वाणी से बतलाते ।
पावन प्रतिभा के प्रताप से परम पिता को पाते ॥११॥

ओ३म् को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वदेवासो मनुषो यतिष्ठन।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ॥१२॥

जिसने रचा प्रशस्त मनोरम, मधुर मोदमय भाया ।
किसने शोभित किया यज्ञ को, अघ-अपराध नशाया ॥१२॥

ओ३म् येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगानः कर्त सुपथा स्वस्तये ।।१३।।

(ऋ.१०/६३/७)

सत्यशील सद्‌गुणी सदा, सम्मान यज्ञ से पाते ।
निर्भय होकर मंङ्गल-नभ में आगे चरण बढाते ।।१३।।

ओ३म् य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ।।१४।।

जिसने विश्व तत्व पहचाना वह ज्ञानी कहलाया ।
कृत-अकृत अघ से विमुक्त हो, जीवन सफल बनाया ।।१४।।

ओ३म् भरेष्विद्रं सुहवं हवामहेऽहोंमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्नि मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये।।१५।।

(ऋ.१०/६३/९)

जिसने गगन, अनल, मारुत, जल, भू-विद्या है पायी ।
उसने अपनी सुयश पताका गौरव से फहरायी ।।१५।।

ओ३म् सुत्रामाणं पृथ्वीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमारुहेमा स्वस्तये ॥१६॥

विश्व उदधि में अपने जीवन की नौका तैरावे ।
धर्म-डाँड से खेकर उसको, लक्ष्य-तीर पहुँचावे ॥१६॥

ओ३म् विश्वे यजत्रा अधिवोचतोय त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिहुतः ।
सत्यया वो देवहूत्या, हुवेम श्रृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥१७॥

(ऋ. १०/६३/११)

विद्वानों की वाणी से प्राणी ज्ञानी बन जाता ।
विषमय विषय विकार मिटा, सुर दुर्लभ पद पा जाता ॥१७॥

ओ३म् अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायत ।
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥१८॥

द्वेष, दम्भ, दुष्कर्म, दर्प, दुर्नय को दूर हटाओ ।
समता स्नेह शील शुचिता, सद्‌गुण सद्‌भाव बढ़ाओ ॥१८॥

ओ३म् अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।।१९।।

(ऋ.१०/६३/१३।।)

अघ-अनर्थ से अपनी आत्मा को अनवरत बचाओ ।
धवल धर्म को धारण करके जग में कीर्ति कमाओ ।।१९।।

ओ३म् यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमारुहेमा स्वस्तये ।।२०।।

(ऋ. १०/६३/१४)

जीवन रूपी रथ को पावन पथ पर सदा चलाओ ।
धवल धर्म को धारण करके जगत में कीर्ति कमाओ ।।२०।।

ओ३म् स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन।।२१।।

(ऋ. १०/६३/२५)

सेना, सुत, जल, धेनु, मार्ग को सुख-सम्पन्न बनाओ
वातावरण विशुद्ध बनाकर वैर विरोध मिटाओ ।।२१।।

ओ३म् स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभिया वाममेति । सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ।।२२।।

(ऋ.१०/६३/१६)

मातृभूमि की सेवा, सागर पर अधिकार जमावे ।
धी-श्री से सम्पन्न जगत को, सच्चा स्वर्ग बनावे ।।२२।।

ओ३म् इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशꣳसो ध्रुवाऽ स्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।।२३।।

(यजु. ०१/११)

वही अन्नदाता, बलदाता, पालक पिता कहाता ।
गौ रक्षा यज्ञादि कर्म से, नर उसके ढ़िग जाता ।।२४।।

ओ३म् आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽ दब्धासोऽ अपरीतासऽ उद्भिदः । देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽ असन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे-दिवे।।२४।।

(यजु.२५/२४)

सदा शुद्ध संकल्प कर, सबका कल्याण मनावे ।
जनता को विद्वान सर्वदा धर्म-तत्व बतलावे ॥२४॥

ओ३म् देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाᳬं रातिरभि नो निवर्त्तताम्।
देवानाᳬं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२५॥
(यजु. २५/१५)

शिक्षा सदाचार से जीवन को उत्कृष्ट बनावें ।
संत-समागम जनित, ज्ञान से अमरत्व पा जावें ॥२५॥

ओ३म् तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमनसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥२६॥
(यजु. २५/१८)

चर अरु अचर जगत् पति से, हम निर्मल नेह लगावें ।
शुद्ध हृदय से करें प्रार्थना, शरणागत हो जावें ॥२६॥

ओ३म् स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धाश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७॥
(यजु. २५/१९)

भवसागर में भ्रम के गोते, खा-खाकर हम हारे ।
आर-पार नहीं कहीं सूझता भगवन! करो किनारे ॥

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टवांश्सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२६॥

(यजु. २५/२१)

श्रुति श्रद्धा से श्रवण करें, सृष्टि सौन्दर्य निहारें ।
दीर्घायू होकर ईश्वर कृत नेम धर्म व्रत धारें ॥२८॥

ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥२९॥

(साम.पूर्वा.क्रपा. १/१)

ज्योतिरूप! मेरे अंतर में, दिव्य ज्योति फैलाओ ।
कर्मयोग के तत्व लखाकर, नर-तन सफल कराओ ॥२९॥

ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।
देवेभिर्मानुषे जने ॥३०॥

(साम.पूर्वाप्रभा १/२

जग के सकल यज्ञ के होता, चिदानन्द कहलाते ।
भक्ति भाव से उस को भजकर, नर भवनिधि तर जाते ॥

ओ३म् ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वारूपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥३१॥

(अथर्व. १/१/१)

त्रिगुण सप्तग्रह मानव मन में अद्‌भुत चक्र चलाते ।
वाचस्पति को निरख "भवानी" नर अभिष्ट फल पाते ॥३१॥

॥ इति स्वस्तिवाचनम् ॥

अथ शान्तिकरणम्

ओ३म् शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिःशं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रा सोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ॥१॥

(ऋ. ७/३५/१)

सूर्य, चंद्र, विद्युत, जल सारे सुख सौभाग्य बढावे ।
रोग-शोक, भय-त्रास हमारे पास कदापि न आवे ॥१॥

ओ३म् शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः । शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शंनो अर्य्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२॥ (ऋ. ७/३५/२)

शासन, धन, ऐश्वर्य, बुद्धि में शुद्ध-भाव फैलावें ।
प्रभू के पद-पंकज पर अपने श्रद्धा-पुष्प चढावें ॥२॥

ओ३म् शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरुची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिःशं नो देवानां सुहवानि सन्तु।।३।।

(ऋ. ७/३५/३)

अन्न, भूमि, गिरी, भानु दिशायें मेघ शुभङ्कर होवे ।
शान्ति स्नेह संतोष सहाये, कलह कालिमा धोवे ।।३।।

ओ३म् शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रा वरुणावश्विना शम् । शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ।।४।।

(ऋ. ७/३५/४)

पवन, प्रकाश, चंद्र, रवि भू पर दुःख संताप नसावे ।
दिवस, प्रमोद, पूर्ण रजनी भी सुख-सौन्दर्य बढावे ।।४।।

ओ३म् शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।।५।।

(ऋ. ७/३/५)

धरणी, रवि श्रेष्ठ कर्म में फलदायक बन जावें ।
औषधि, अन्न, वनस्पति से हम सम्यक् लाभ उठावें ।।५।।

ओ३म् शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह श्रृणोतु ।।६।।

(ऋ. ७/३२/६)

निर्मल नीर निरोगी होवे भानु रश्मि छिटकावे ।
ज्ञानी की सत्संङ्ग-गङ्गा में गोता सदा लगावे ।।६।।

ओ३म् शं न सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शंनो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरुणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।।७।।

(ऋ. ७/३५/७५)

चन्द्र प्रभा नभ में निरखे, शुभ औषधि व्याधि मिटावे ।
यज्ञ कर्म से जग में मानव मनवांछित फल पावे ।।७।।

ओ३म् शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।८।।

पानी, पवन, पहाड़, दिशाएँ रवि रक्षक बन जावे ।
वसुधा शांत सुरम्य समूचे, जीव जन्तु सुख पावे ।।८।।

ओ३म् शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।।९।।

(ऋ. ७/३५/९)

पृथ्वी, गगन, भानु, जल, वायु, नित उल्लास बढ़ावे ।
विद्वानों के वचनामृत से धर्म तत्व पा जावे ।।९।।

ओ३म् शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नोः भवन्तूषसोविभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।।१०।।

(ऋ. ७/३५/१०)

पावन, पुण्य प्रभात काल, बादल विशुद्ध हितकारी ।
मही-माता की पूजा करते-अनुदिन कृषक पुजारी ।।१०।।

ओ३म् शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।११।।

(ऋ. ७/३५/११)

भू-नभ अंतर्गत पदार्थ मङ्गलदायक हो जावे ।
विज्ञानी प्रकृति के सारे, गूढ रहस्य बतावे ।।११।।

ओ३म् शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥१२॥
(ऋ. ७/३२/१२)

गौ के मधुर क्षीर का सेवन तेज तुरङ्ग सवारी।
शिल्पी गुण सम्पन्न पितर हो सत्य शील हितकारी ॥१२॥

ओ३म् शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शं नोऽ हिर्बुधन्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥१३॥
(ऋ. ७/३५/१३)

अज अद्वैत अजात अमर अखिलेश्वर को हम ध्यावें।
उत्पत्ति स्थिति प्रलयंकर को पलभर नहीं भुलावें ॥१३॥

ओ३म् इन्द्रो विश्वस्य राजति।
शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१४॥
(यजु. ३६/८)

निर्भय होकर पशु प्राणी, जगती में हर्ष मनावें।
कर्मयोनि को पाकर मानव निज कर्तव्य निभावें ॥१४॥

ओ३म् शं नो वातः पवताᳪं शंनस्तुपतु सूर्य्यः ।
शं न कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽ अभिवर्षतु ॥१५॥

(यजु. ३६/१०)

वायु बहार विमल वसुधा पर भानु रश्मि चमकावे ।
समय समय पर बरसे बादल, कभी अकाल न आवे ॥१५॥

ओ३म् अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम् ।
शं न इंद्राग्नी भवतामवोभिः शं नऽ इन्द्रा वरुणा रातहव्या।
शं नऽ इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंयोः॥१६॥

(यजु. ३६/११)

निशि-वासर मङ्गलमय विद्युत अनल लाभ पहुँचावे ।
अन्न और जल रोग निवारक, भू-माता से पावे ॥१६॥

ओ३म् शं नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥१७॥

(यजु. ३६/१२)

हे भगवन! हमारे सारे पूर्ण मनोरथ कीजे ।
सद्‌गुण शक्ति शौर्य सत्साहस नीर सुधामय दीजे ॥१७॥

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१८॥

(यजु. ३६/१७)

अंतरिक्ष द्यौ भूमि वनस्पति औषधि रोग निवारे।
विश्वदेव की दिव्य दया से शांति पूर्ण हो सारे ॥१८॥

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं, जीवेम
शरदः शतꣳ श्रृणुयाम शरद शतं, प्रब्रवाम शरदः शतमऽ दीनाः
स्याम शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात् ॥१९॥

(यजु. ३६/२४)

सदा वेद की ऋचा सुने, सृष्टि से दृष्टि लगावें।
शत् सम्वत् तक सर्वेश्वर का वाणी से गुण गावें ॥१८॥

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२०॥

(यजु. ३४/१)

प्रभो! जागते हुए सदा जो दूर-दूर तक जाता है।
सोने में भी दिव्य शक्तिमय कोसों दौड़ लगाता है॥

दूर-दूर वह जानेवाला तेजों का भी तेज महान।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान ॥२०॥

ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२१॥

(यजु. ३४/२)

जिसके द्वारा बुद्धिमान सब नाना करतब करते हैं।
सत्कर्मों को करे मनीषी वीर युद्ध में मरते हैं।
पूजनीय अतिशय जिसका है प्रजा वर्ग में अद्‌भुत मान
नित्य युक्त शिव संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान ॥२१॥

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२२॥

(यजु. ३४/३)

जिसमें धैर्य शक्ति चिंतन की तथा ज्ञान रहता भरपूर।
प्राणी मात्र में अमृतमय है, अरु प्रकाश का बहता पूर ॥
जिसके बिना नही चलता है, निश्चय कोई कार्य विधान।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान ॥२२॥

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२३॥
(यजु. ३४/४)

अमर तत्व जो त्रय कालों का भेद यथावत् पाता है ।
बुद्धि ज्ञान की पाँच इंद्रियाँ अंहकार से नाता है ।
इन्ही सप्त ऋत्विज् का फैला जिसमें निशदिन यज्ञ वितान ।
नित्य युक्त शिवसंकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान ॥२३॥

ओ३म् यस्मिन्नृचः साम यजुंर्ंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः
यस्मिँश्चित्तंसर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥२४॥
(यजु. ३४/५)

चार वेद निगमागम सारे, ईश-ज्ञान के सुंदर स्रोत ।
रथ के पहिये में ज्यों आरे सारे रहते हैं ओत-प्रोत ॥
जंगम-जग का चित्त अचल हो जिसमें रहता निष्ठावान
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान ॥२४॥

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽ भिशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२५॥
(यजु. ३४/६)

जो जन-कुल की बागडोर से इधर-उधर ले जाता है ।
चतुर सारथी ज्यों घोडों को उत्तम चाल चलाता है ।
सदा प्रतिष्ठित हृदय देश में विपुल तीव्र गति अजर महान ।
नित्य युक्त शिव संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान ॥२५॥

ओ३म् स नः पवस्व शं गवे । शं जनाय शमर्वते ।
शं राजन्नोषधीभ्यः ॥२६॥ (साम. उतरा १/३)

हे भगवान! हमारे मन में ज्ञान-प्रभा फैलाओ ।
ओषधि, सोम, धेनु, नर रक्षा में कटिबद्ध कराओ ॥२६॥

ओ३म् अभयं नः करत्यन्तरिक्षमयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥२७॥

(अथर्व. १९/१५/५)

अंतरिक्ष द्यौ पृथ्वी प्रमुदित हम को अभय बनावे ।
प्रभू के पद पर यज्ञ कर्म के फल परमार्थ चढ़ावे ॥२७॥

ओ३म् अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥२८॥

(अथर्व. १९/१५/६)

मित्र, अमित्र अंधेरी रजनी अनुदिन अभय बनावे ।
भक्त 'भवानी' भय-भञ्जक पर श्रद्धा-सुमन चढावे

॥ इति शान्तिकरणम् ॥

यज्ञ विधि :

अग्न्याधान मन्त्र :

यज्ञ कुण्ड अथवा वेदी में समिधा रखें. तीन समिधा घृत लगा कर अलग रखें. पुनः निम्न मंत्र द्वारा घृत के दीपक से कपूर जलावें. अग्न्याधान निम्न मंत्र से करें.

ओ३म् भूर्भुवः स्वः ।। (गोभिल ।गृ.प्र. ।१।ख। १ म ११म)

भाव - हे सच्चिदानन्द! यह अग्नि मंगलमय हो ।

फिर उस जलते कपूर को चम्मच में रखकर नीचे लिखे मंत्र से समिधाओं के मध्य हवन कुंड में छोड दे.

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिवभूम्नापृथिवीवरिम्णा ।

तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्टेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।।

(यजु. ३/५।।)

सर्व देवताओं को यथायोग्य भाग पहुँचानेवाले अग्नि देव को प्रदीप्त करके मैं सर्वलोक को अनुकूल बनाने के लिये उस परमेश्वर की प्रार्थना करता हूँ.

जो सर्वाधार, सर्वव्यापक, और सुखस्वरुप है और जिसमें पृथ्वी, अन्तरिक्ष, और द्यौलोक स्थित है. यह यज्ञादि हमें अन्नादि देकर तृप्त और पुष्ट करें.

निम्न मंत्र से कुंड में छोटी-छोटी समिधायें रख कर अग्नि को प्रज्वलित करें. आवश्यक हो तो पंखे से अग्नि को प्रदीप्त करें -

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते संसृजेथामयं च ।

अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।।

(यजु. अ. १५/मं/५४)

भावार्थ : हे अग्ने! तू प्रसन्न होकर प्रगट हो. हे यजमान! तुम सजग और सावधान होकर यज्ञ-कर्म का अनुष्ठान करो. वेद ज्ञान फैलाओ, अतिथि-सत्कार करो. कुआँ खुदवाओ. बाग-बगीचे लगाओ. पाठशाला और धर्मशाला का निर्माण करो, पुस्तकालय और चिकित्सालय खोलो. जनता की सेवा, परोपकार, इष्टकर्म (यज्ञ) के अनेक रूप हैं. इस यज्ञ में विश्वदेव विराजमान हो.

समिदाधान के मन्त्र :

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे तब तीन समिधायें जो पहले से ही अलग रखी गई हैं, घी में भिगोकर अग्नि में भेंट करें. निम्न मंत्र से पहली समिधा चढ़ावें.

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥१॥ पहली समिधा

(अश्व.गृ. १/१०/१२)

हे घट-घट के व्यापी भगवान! यह मेरी आत्मा तेरे लिये समिधारूप है. मुझ में तू प्रकाशित होकर प्रेरणा कर जिससे मैं कल्याण-मार्ग में आगे बढ़ूं. हमें तू आज्ञाकारी पुत्र-पौत्र, सेवक आदि प्रजा से प्रतिष्ठित कर, गौ आदि पशुओं एवं दूध, घी, अन्न आदि खाद्य पदार्थों से भरपूर समृद्ध कर. यह सुंदर समिधा है, ज्ञान स्वरुप परमात्मा के लिये, मेरे लिये नहीं ॥१॥ पहली समिधा

निम्न दो मंत्रों से दूसरी समिधा चढ़ावें.

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।

आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा ।।इदमग्नये-इदन्न मम।।

(यजु. ३/१)

ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन ।

अग्नये जातवेदसे स्वाहा ।।इदमग्नये - इदन्न मम।।३।।

(यजु. ३/२)

हे विद्वानो! तुम समिधा से यज्ञ की पवित्र अग्नि को प्रज्वलित करो और इस यज्ञाग्नि को अतिथि की तरह घृतादि से सेवा करो. इसमें अपनी कामनाओं की त्याग-रूपी सामग्री की यथाविधि आहुति भेंट करो जिससे सारे संसार का कल्याण हो. यह सुन्दर समिधा है. प्रकाश स्वरुप परमेश्वर के लिये है, मेरे लिये नहीं ।।३।।

(इस निम्न लिखित मंत्र से तीसरी समिधा भेंट करें)

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि ।

बृहच्छोच्छायविष्ट्य स्वाहा । इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम ।।४।।

(यजु. अ. ३/मं./१/२३)

भावार्थ - हे सर्व फलदायक प्रगतिशील अग्ने मुझे घृत और समिधाओं से अलंकृत वातावरण को शांत, शुद्ध और सात्विक बनावें. यह सुंदर समिधा है, मंगलस्वरुप महेश्वर के लिये, मेरे लिये नहीं.

पञ्च घृताहुति मन्त्र :

ओ३म् अयन्त इदध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नद्येन समेधय स्वाहा ।। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ।।१।। (आश्व.गृह.१/१०/१२)

भावार्थ : हे अग्ने! यह समिधा तेरा आधार है, इससे तू प्रदीप्त हो. हमको पुत्रादि प्रजा से सम्पन्न कर और पशुओं से लाभ पहुँचा. यह हमारी आहुति स्वीकार कर, यह प्रजापति परमात्मा के लिये है; मेरे लिये नहीं.

जल-प्रसेचन-मन्त्र :

तत्पश्चात् अंजलि में जल लेकर वेदी के पूर्व आदि दिशा और चारों और जल छिड़कावे, इसके यह मंत्र हैं.

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व ।।१।। इससे पूर्व दिशा में

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व ।।२।। इससे पश्चिम दिशा में

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व ।।३।। तथा इससे उत्तर में जल छिड़कें

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो, गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।। (यजु. ३०/१)

(इस मंत्र से वेदी के चारों और जल छिड़कावे)

हे प्रभु! आप शिल्पाचार्यों और विश्वकर्ताओं को उत्पन्न कर संसार का सौंदर्य बढ़ावें और यज्ञपतियों को पैदा कर प्रजा का कल्याण करावें. संगितज्ञों और साहित्यकारों में पवित्र भाव भरें. आप वाचस्पति हैं अतएव हमारी वाणी को मधुर और बुद्धि को विशुद्ध बनावें.

आघारावाज्याहुति :

फिर निम्नलिखित मंत्रों से घृत की दो आहुतियाँ हवन कुंड के भीतर प्रज्वलित अग्नि पर देवें.

ओ३म् अग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम । (उत्तर दिशा में)

उत्तर दिशा में प्रकाशरुप परमेश्वर अथवा यज्ञाग्नि के लिये यह आहुति है. मेरे लिये नहीं.

ओ३म् सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय इदन्न मम । (दक्षिण दिशा में)

शांतिस्वरुप सर्वेश्वर अथवा सोमलताआदि औषधि लिये यह आहुति है, मेरे लिये नहीं.

आज्यभागाहुति :

निम्न दोनों मंत्रों से यज्ञ कुंड के मध्य भाग में घी की आहुति देवें.

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ।

प्रजापति परमात्मा या प्रजापालक प्रजातंत्र के लिये यह आहुति है. मेरे लिये नहीं.

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय इदन्न मम ।

यह परमेश्वर्यवान् परमात्मा के लिए है मेरे लिए नहीं.

सामान्यप्रकरण :

अग्न्याधान, समिधाधान, घृताहुति, जल प्रोक्षण तथा आधारावाज्यभागाहुति करने के पश्चात् निम्न लिखित विधि करें.

प्रधान होम की आहुतियाँ

व्याहृत्याहुति :

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम ॥१॥

प्राणों के प्राण अग्नि रूप ईश्वर के लिये यह सुंदर आहुति है. यह अग्नि के लिये है. यह मेरे लिये नहीं है.

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा । इदं वायवे इदन्न मम ॥२॥

दुःखनाशक वायु के समान वेगवान ईश्वर के लिये यह सुंदर आहुति है. यह वायु के लिये है, मेरे लिये नहीं.

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा । इदमादित्याय इदन्न मम ॥

सुख स्वरुप आदित्यवत् प्रकाशक ईश्वर के लिये वह सुंदर आहुति है यह आदित्य के लिये है, मेरे लिये नहीं है.

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ॥४॥

पूर्वोक्त सर्वगुण सम्पन्न ईश्वर के लिये यह आहुति यह आहुति है. उतम वाणी के लिये है मेरे लिये नहीं है.

स्विष्टकृतहोमाहुति मन्त्र :

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वान्यूनमिहाकरम । अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते इदं न मम ।।

(आश्व. १/१०/२२/शतपथ बा. ३४/९/४/२४)

भावार्थ - यह भौतिक अग्नि शरीर का और आध्यात्मिक अग्नि आत्मा का कल्याण करे, यज्ञ फलदायक हो, पूर्वकृत पाप के लिये प्रायश्चित की प्रेरणा मिले, कामनायें स्वार्थपूर्ण नहीं, प्रत्युत जनहितकारी हों. मैंने कर्म का जो कुछ अनुष्ठान किया, चाहे वह अधिक हो या कम, उसे मैं श्रद्धा से इष्टदेव के चरणों पर चढाता हूँ. उस पर मेरा कोई अधिकार नहीं है.

प्राजापत्याहुति :

इस मंत्र को मन में पढकर आहुति दें

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ।।

आज्यभागाहुति (पवमानाहुति)

निम्न मंत्रों से केवल घृत की आहुति दें.

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा ।। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।१।।

हे प्राणों के प्राण, दुःखनाशक, सुखस्वरुप, आनन्दस्वरुप प्रभो! आप

हमारे जीवनों की रक्षा करते हो, हमें बल और अन्न को प्राप्त कराइये.. रोग जंतु आदि पीड़ित राक्षसों को दूर कीजिये. यह आहुति पवित्र करनेवाले अग्नि के लिये है. मेरे लिये नहीं है ॥१॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।

तमीमहे महागयं स्वाहा ।। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।२।।

- ऋ. ९।६६।२०॥

भावार्थ - वह भूर्भुवः और स्वः अर्थात् प्रकाश स्वरुप भगवन सर्वदृष्टा शोधक चारों वर्ण व इतर लोगों में कार्य साधक सबका अगवा, उस बहुत स्तुति अर्थात् प्रशंसा के योग्य प्रभु को हम प्राप्त होते हैं. यह पवित्र करने वाले प्रकाश स्वरुप परमात्मा के लिये है. यह मेरे लिये नहीं है ॥२॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।

दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।३।।

(ऋ. ९।६६।२१)

भावार्थ - हे प्राणों के प्राण, दुःखविनाशक, सुखस्वरुप, प्रकाशक, भगवन! आप अच्छे कर्मों के अधिष्ठाता हैं. आप हमें बल और पराक्रम प्राप्त कराइये. मुझ में धनादि को और शरीर की पुष्टि को धारण कराइये. यह आहुति पवित्र करनेवाले प्रकाशस्वरुप परमात्मा के लिये है मेरे लिए नहीं ॥३॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयिणां स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ।।४।।(ऋ. १०।१२१।१०)

भावार्थ - हे प्रजापति! तू सर्वोपरि है. जिस कामना से हम तेरा आश्रय लेवें, उसे तू पूर्ण कर, जिससे हम सब सुख-सम्पत्ति भोग सकें. यह आहुति प्रजापति के लिये है. मेरे लिये नहीं ॥४॥

अष्टाण्याहुति :

इसके अनन्तर समस्त मंगल कार्यों में निम्नलिखित आठ मंत्रों से अष्टाज्याहुति हवन सामग्री सहित देनी चाहिये.

ओ३म् त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽवयासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां इदन्न मम ॥१॥

(ऋ. ४।१।४।।)

भावार्थ - हे प्रकाशमान परमात्मा! तू ही हमारे सब दृश्य अदृश्य कर्मों को जाननेवाला है. हमें ऐसी सुमति दो कि हम सदैव तेरी आज्ञा का पालन करें और किसी से द्वेष भाव न रखें. यह आहुति उसी तेजस्वी यज्ञपति के लिये है, मेरे लिये नहीं है ॥१॥

ओ३म् स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां इदन्न मम ॥२॥

(ऋ. ४।१।५)

भावार्थ - हे ज्योतिर्मय जगदीश्वर! आप हमारी रक्षा और पालन करें. इस सुंदर प्रभातकाल में अग्निहोत्रादि शुभ कर्मों से हमारे अंतःकरण में छिपी हुई

पाप वासनायें नष्ट हो जावें. पुण्य कार्यों में सदा प्रेरणा और फल देने वाले प्रभु! इस हवि को आप स्वीकार करें. यह आहुति परमात्मा के लिये है, मेरे लिये नहीं है ॥२॥

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय । त्वामवस्युरा चके स्वाहा ॥ इदं वरुणाय इदन्न मम ॥३॥

(ऋ. १।२५।१९)

भावार्थ - हे उपास्येदव! आप मेरी प्रार्थना को सुनें. आज इस यज्ञ से हमें सुखी करें. मनोकामना की पूर्ति के लिये मैं बारम्बार तुम्हारी स्तुति करता हूँ. यह आहुति प्रशंसनीय परमात्मा के लिये है, मेरे लिये नहीं ॥३॥

ओ३म् तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा। इदं वरुणाय इदन्न मम ॥४॥ (ऋ. १।२४।११)

भावार्थ - हे अखिलेश्वर! हमारी वेद विहित स्तुति स्वीकार करो. हम तुम से आयु की कामना करते हैं और उस यज्ञादि शुभ कार्यों के अनुष्ठान में उपभोग करना चाहते हैं. यह आहुति परम पिता के लिये है, मेरे लिये नहीं ॥४॥

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्योः मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम ॥५॥ (कात्या.श्रौ. २५।१।१०)

भावार्थ - हे पूज्य परमेश्वर! यज्ञ सम्बन्धी शुभ कर्मों में सैंकडों, हजारों विघ्न बाधायें आ पड़ती हैं, उससे आप हमारी रक्षा करो ॥५॥

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्त्वमया असि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजंश्स्वाहा । इदमग्नये अयसे इदन्न मम ॥६॥

(कात्या. श्रौ. २५-१।११)

भावार्थ - हे विश्वेश्वर! आप बाहर और भीतर सर्वत्र विराजमान हो, निर्दोष और निष्कलंक मनुष्यों के प्रतिपालक और कल्याणकारक हो. हमारे शोक-संताप को दूर करो. यह आहुति विश्वम्भर के लिये है, मेरे लिये नहीं ॥६॥

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा । इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च इदन्न मम ॥७॥

(ऋ. १।२४।१५)

भावार्थ - हे अविनाशी ईश्वर! हमारे जीवन के छोटे-बडे सभी बंधनों को काट दें, हमारे हृदय में कोई दुर्भाव न हो. हम शरीर से कोई अपराध न करें. तुम्हारे आदर्श का पालन और मोक्ष - प्राप्ति का प्रयत्न करते रहें. यह आहुति पूजनीय परमात्मा के लिये है, मेरे लिये नहीं ॥७॥

ओ३म् भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ । मा यज्ञंहिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा । इदं जातवेदोभ्यां इदन्न मम ॥८॥

(यजु. ५।३)

भावार्थ - हे दयानिधे! हमारे मध्य में समान मन और समान बुद्धिवाले निष्पाप व्यक्तियों का समाज हो. हम एक दूसरे की सेवा और सहायता करें. यज्ञ का लोप न होने दें, यज्ञकर्ता की रक्षा करें. आज यज्ञ-काल में सभी शांत रुप हों. यह आहुति ब्रह्म के लिये है मेरे लिए नही ॥८॥

प्रातः कालीन आहुति के मंत्र :

(निम्नलिखित मंत्रों सें घी के साथ सामग्री की आहुतियाँ भी देवें)

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१॥

इस सूर्य के प्रकाश के प्रकाशक परमात्मा की प्रसन्नता के लिये हम स्तुति करें ॥१॥

ओ३म् सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥

सर्व विद्या और ज्ञान के दाता सर्वेश्वर के अनुग्रह के लिये हम स्तुति करते हैं ॥२।.

ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥३॥

जिसकी ज्योति से सारा जगत जगमगा रहा है, उसी जगदीश्वर की प्रसन्नता के लिये हम स्तुति करते हैं ॥३॥

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः

सूर्योवेतु स्वाहा ॥४॥

सर्वलोक में व्यापक सर्वशक्तिमान सर्वनियन्ता, सर्वेश्वर की प्रीति प्राप्त करने के लिये हम स्तुति करते हैं ॥४॥

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।

इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ॥१॥

परमेश्वर प्राणाधार है. वही प्राणवायु का पोषक है. उसी के लिये यह आहुति है, मेरे लिये नहीं ॥१॥

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ।

इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम॥२॥

परमेश्वर प्राणपति है. वही अपना-आयु का रक्षक है. उसी के लिये यह आहुति है, मेरे लिये नहीं है ॥२॥

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।

इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम ॥३॥

परमेश्वर मंगल-स्वरुप है. उसी के प्रताप से व्यान-वायु मनुष्य के लिये स्वास्थ्यदायक है. यह आहुति उसी के लिये है, मेरे लिये नहीं ॥३॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।

इदमग्नि वाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम ॥

(पार. का. १५।स३।४॥)

परमात्मा सबका स्वामी है. अग्नि, वायु, और सूर्य उसी के नियम के आधीन हैं. वही प्राण, अपान और व्यान से जीवन का पोषण और रक्षण करता है. यह आहुति उसी के लिये है, मेरे लिये नहीं.

ओ३म् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥

परमात्मा सर्वरक्षक, सर्वव्यापक, ज्योतिर्मय, जगत का बीज, अविनाशी, सृष्टिकर्ता, सर्वाधार, अंतर्यामी और सुखस्वरुप है. तदनन्तर निम्न लिखित तीन मंत्रों से आहुति दें.

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।

तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

हे ज्ञान स्वरुप परमेश्वर! जिस मेधा बुद्धि का आश्रय लेकर मनुष्य उच्च पद प्राप्त कर लेता है, उस मेधा से हमें अलंकृत करो.

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।

यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ॥

(अर्थ-प्रार्थना मंत्र में)

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽ उक्तिं विधेम स्वाहा।।

(यजु. ४०/१६)

(इस मंत्र का अर्थ प्रार्थना में)

सायंकालीन आहुति के मंत्र :

ओ३म् अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।१।।

अग्नि की ज्योति की भी ज्योति उस जगदीश्वर के अनुग्रह के लिये हम प्रार्थना करते हैं ।।१।।

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।२।।

अग्नि में ज्योति स्वरुप परमेश्वर की दीप्ति है, उसकी हम प्रार्थना करते हैं ।।२।।

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।३।।

(इस मंत्र का मन में उच्चारण करके आहुति दें)

अग्नि की ज्योति में परमात्मा की ज्योति है, उसकी स्तुति प्रार्थना करते हैं ।।३।।

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा॥४॥

प्रकाशमान सर्वप्रेरक महाप्रभु की रात्री भी एक महाविभूति है. वह हमारे लिये प्रीतियुक्त सुखदप्रद हो. यह यज्ञ सफल हो. यही परमात्मा से हमारी प्रार्थना है ॥४॥

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥१॥

इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ॥

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ॥२॥

इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम ॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ॥

ओ३म् आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥

यदि घृत और सामग्री शेष रहे तो गायत्री मंत्र या विश्वानिदेव से इच्छानुसार आहुतियाँ पूर्णाहुति मंत्र से पूर्व ही देवें ।

पूर्णाहुति प्रकरण

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं थ्रं स्वाहा ॥१॥

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं थ्रं स्वाहा ॥२॥

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं थ्रं स्वाहा ॥३॥

प्रार्थना

ओ३म् तनूपाऽग्नेसि तन्वं मे पाहि ।

ओ३म् आयुर्दाऽग्नेऽस्यायुर्मे देही ।

ओ३म् वर्चोदाऽग्नेसि वर्चो मे देही ।

ओ३म् अग्ने यन्मे तन्वा उनं तन्म आपृण ।

ओ३म् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ।

ओ३म् वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ॥

ओ३म् बलमसि बलं मयि धेहि ।

ओ३म् ओजोऽस्योजो मयि धेहि ॥

ओ३म् मन्युरसि मन्युं मयि धेहि ।

ओ३म् सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥

ओ३म् यत्तेऽग्ने तेजस्तेनाऽहं तेजस्वी भूयासम् ।

ओ३म् येत्तेऽग्ने वर्चस्तेनाऽहं वर्चस्वी भूयासम् ।

ओ३म् येत्तेऽग्ने हरस्तेनाऽहं हरस्वी भूयासम् ।

ओ३म् मेधां मे देवः सविता आदधातु ।

ओ३म् मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ।

ओ३म् मेधां मे अश्विनौ देवौवाधत्तौ पुष्करस्रजौ ॥

पूर्णमासी के मंत्र

ओ३म् अग्नये स्वाहा ॥१॥

ओ३म् अग्निषोमाभ्यां स्वाहा ॥२॥

ओ३म् विष्णवे स्वाहा ॥३॥

अमावस्या के मंत्र

ओ३म् अग्नये स्वाहा ॥१॥

ओ३म् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ॥२॥

ओ३म् विष्णवे स्वाहा ॥३॥

पितृयज्ञ :

प्रत्येक ब्रह्मचारी व गृहस्थी का परम कर्तव्य है कि अपने जीवित माता-पिता, दादा-दादी आदि अपने बडों की नित्य श्रद्धा भक्ति सहित सेवा करें. जिन माता पिता आदिने अनेक प्रकार के कष्ट उठाकर हमारा लालन-पालन किया है, उनके ऋण से मुक्त होना अति आवश्यक है, जो लोग इस कार्य में प्रमाद-उपेक्षा करते हैं, वे नरकगामी होते हैं.

अतः प्रत्येक ब्रह्मचारी व गृहस्थी का परम कर्तव्य है कि अपने माता-पिता आदि गुरुजनों को अपनी सेवा से तृप्त करें. इसी का तर्पण कहते हैं. इनको

श्रद्धापूर्व सेवा करने को ही 'श्राद्ध' कहते हैं.

आज कल अविद्यान्धकार में पडकर लोग तर्पण और श्राद्ध का अर्थ ही भूल गये हैं, और माता-पिता के मर जाने पर कल्पित तीर्थों में जाकर तर्पण और पिण्डदान तथा नामधारी ब्राह्मणों को भोजन कराकर उनका श्राद्ध करते हैं. परंतु यह सब व्यर्थ है क्योंकि जीवात्मा मरकर अपने कर्मानुसार दूसरा शरीर धारण कर लेता है. इस तर्पण व श्राद्ध से उनको कोई लाभ नहीं पहुँच सकता.

प्रायः देखा जाता है कि लोग जीवित माता-पिता की सेवा में उपेक्षा करते हैं, और मरने पर उनकी अस्थियों को गंगा में पहुँचाते हैं. वहाँ तर्पण-श्राद्ध करते हैं. इस पर किसी कवि ने कहा है -

जीवित मात-पिता से दंगम दंगा ।

मरे मात-पिता को पहुँचाए गंगा ॥

भला आप ही विचार करो इस से क्या लाभ? सच्चा तर्पण व श्राद्ध तो यही है कि जीवित माता-पिता की नित्य प्रति श्रद्धा भक्तिपूर्वक सेवा की जावे और उनको हर प्रकार से संतुष्ट रखा जावे. यही वास्तविक पितृ-यज्ञ है. जो ऐसा करते हैं उनकी प्रत्येक कामना भगवान पूर्ण करता है.

(इस विषय में हमारे द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'श्राद्ध पितरों का या मृतकों का?' पढ़िये)

बलिवैश्वदेवयज्ञ :

जब परिवार का भोजन बन जाय तो भोजन के पूर्व प्रथम निम्नलिखित मंत्रों से घृत मिश्रित भात या नमकीन वस्तु के अतिरिक्त जो कुछ भोजन बना हो हवन कुंड अग्नि में - चूल्हे में आगे लिखी दस आहुति दें.

ओ३म् अग्नये स्वाहा ॥१॥

परमेश्वर के लिये यह सुंदर आहुति है.

ओ३म् सोमाय स्वाहा ॥२॥

सब पदार्थों को उत्पन्न और पुष्ट करके सुख देनेवाले परमेश्वर को यह सुंदर आहुति है.

ओ३म् अग्निषोमाभ्यां स्वाहा ॥३॥

जो सब प्राणियों के जीवन का हेतु और अपान स्वरुप (दुःख नाशक) ईश्वर के लिये यह सुंदर आहुति श्रद्धा भाव से है.

ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥४॥

संसार को प्रकाशित करनेवाले परमेश्वर के गुण अथवा विद्वानों के लिये यह सुंदर आहुति है.

ओ३म् धन्वन्तरये स्वाहा ॥५॥

जन्म-मरण रूप रोगों का नाश करनेवाले परमात्मा के लिये यह सुंदर आहुति है.

ओ३म् कुह्वै स्वाहा ॥६॥

अमावस्येष्टि आदि के लिये यह आहुति है.

ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा ॥७॥

पौर्णमास्येष्टि अथवा परमेश्वर की महान शक्ति के लिये यह सुंदर आहुति है ॥७॥

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा ॥८॥

सब जगत के स्वामी के लिये यह सुंदर आहुति है.

ओ३म् सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥९॥

पृथ्वी के पालन और सत्य-विद्या के प्रकाशक के लिये यह आहुति है.

ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा ॥१०॥

इष्ट सुख के करने वाले प्रभु के लिये यह सुंदर आहुति है.

अतिथि-यज्ञ :

धार्मिक, परोपकारी, सत्योपदेशक, पक्षपातरहित, सर्व हितकारक विद्वानों की अन्नादि से सेवा सत्कार करना तथा उनसे श्रद्धापूर्वक शंका-समाधान प्रश्नोत्तर आदि करके ज्ञान प्राप्त करना ही "अतिथि-यज्ञ" कहलाता है. यह भी नित्य कर्तव्य है. इस प्रकार उपर्युक्त पंचमहायज्ञों को परिवार के सभी पुरुष नित्य किया करें.

अपने बडों को अभिवादन (नमस्ते) भी करना चाहिये. अपने बडों के आशिर्वाद का महत्व नीतिकारोंने निम्न श्लोकद्वारा बतलाया है.

अभिवादनीशीलस्य नित्यं वृध्दोपसेविनः ।
चत्वारी तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ।।

महामृत्युंजय मन्त्र

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात् ।।

भावार्थ - हम लोग जो (सुगन्धिम्) शुद्ध गंध युक्त (पुष्टिवर्धनम्) शरीर, आत्मा और समाज के बल को बढानेवाला (त्र्यंबकम्) रुद्ररुप जगदीश्वर है, उसीकी (यजामहे) निरन्तर स्तुति करें. इनकी कृपा से (उर्वारुकमिव) जैसे खरबूजा फल पक कर (बंधनात्) लता के बंधन से छूटकर अमृत के तुल्य होता है, वैसे हम लोग भी (मृत्यो) प्राण व शरीर के वियोग से (मुक्षीय) छूट जावें. (अमृतात्) और मोक्ष सुख से (मा) कभी भी अलग न होवें.

व्रतधारण-प्रतिज्ञा मन्त्र

(निम्न मंत्रों से यज्ञ के समय आहुतियाँ दें)

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि । तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम् । तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम ।।१।।

ओ३म् वायो व्रतपते...
इदं वायवे इदन्न मम ।।२।।

ओ३म् सूर्य व्रतपते...
इदं सूर्याय इदन्न मम ।।३।।

ओ३म् चन्द्र व्रतपते...

इदं चन्द्राय इदन्न मम ।।४।।

ओ३म् व्रतानां व्रतपते...

इदमिन्द्राय व्रतपते इदन्न मम ।।५।।

व्रतों के पति अग्नि भगवान! व्रतों को धारे हम बनें महान ।
शक्ति का दो हमें वरदान, सफलता मिले न हो अभिमान ॥
व्रत यही अनृत से हटकर, सत्य पर रहे सदा डट कर ।
धर्म को रखे सदा सिर पर, राष्ट्र रक्षा में हो दृढ कर ॥
बने हम गो-ब्रह्मण प्रतिपालक, बने तब भारत राष्ट्र महान।
उठो अब भारतीय संतान, विश्व में फैलाओ श्रुति ज्ञान ॥
ऋषिवर दयानन्द महान, विश्व को दे गये वैदिक ज्ञान ।
विनय 'केवल' की, धर लो ध्यान, संगठन है यह मंत्र महान ॥
व्रतों के पति अग्नि भगवान, व्रतों को धारें बनें महान ।
शक्ति का दो हमें वरदान, सफलता मिले, न हो अभिमान ॥

भोजन के (पूर्व) मन्त्र

ओ३म् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।

प्र प्रदातारं तारिष, ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।।

भावार्थ - हे अन्न के स्वामिन प्रभो! हमें पवित्र अन्न दो. जो रोग नाशक और

पुष्टिकारक हो. आप अन्नदाता का कल्याण करें, दुपाये-मनुष्य और चौपाये-पशुओं में तेज धारण करो.

भोजन के (पश्चात्) मंत्र

ओ३म् मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः । सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य । अर्यमणं पुष्यति नो सखायं, केवलाघो भवति केवलादी ।।

भावार्थ - मूढ अज्ञानी तो अन्न को व्यर्थ प्राप्त करता है. सच कहता हूँ वह उसका घातक ही होता है, क्योंकि वह न तो प्रजा का पालन करता है और न ही अपने बंधुजनों का. सच तो यह है कि अकेला खानेवाला केवल पापमय भोजन करता है.

मंगल कामना

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथ्वी सस्यशालिनी ।

कालोऽयं क्षोभरहितः सज्जनाः सन्तु निर्भया ः ।।

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणःसन्तु पौत्रिणः ।

अधना सधनास्सन्तु जीवन्तु शरदः शतम् ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पशन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत् ॥

कविता भाव

समय-समय पर बरसे बादल, पृथ्वी फल-फूलों से भरी ।
सभी काल हों सुखमय सज्जन हों सब निर्भय हारी ॥
अपुत्रों के पुत्र रत्न हों, पुत्रों के हो पौत्र महान ।
दीनता हो नष्ट हों अदीन बने सब, शत् आयु हो जीवन भगवान! ॥
सकल सुखी हो प्राणी जगत में, सब ही निर्भय हो बलवान ।
सब ही भद्र भावना मन में, जगत भद्र का करे सन्मान ॥
'केवल' की है विनय प्रार्थना, प्रभुवर से है ये अरमान ।
प्राणी मात्र का सुखमय जीवन, विश्व बने फिर आर्य महान ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।
अपघ्नन्तो अराण्णः ॥

कविता भाव

हे प्रभू! हम तुमसे वर पावें ।
अखिल विश्व को आर्य बनावें ॥
फैले सुख सम्पति फैलावें ।
आप बढ़े प्रिय राष्ट्र बढावें ॥

वैर विघ्न को मार मिटावें ।
प्रीति नीति की रीत चलावें ॥
असत् अविद्या दूर भगावें ।
वेद ज्ञान की ज्योति जगावें ॥
'केवल' वेदमार्ग ही चले-चलावें ।
सकल जगत को आर्य बनावें ॥

प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में चार बजे उठकर निम्न मंत्रों से प्रार्थना करें

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे, प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रूद्रं हुवेम ॥१॥

(ऋ.मं. ७ सू. ४१ मं १)

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजाचिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥

(ऋ.मं.७ सू.४१ मं २)

ओ३म् भग प्रर्णेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥

(ऋ.मं.७ सू. ४१/मं ३)

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥

(ऋ.मं. ७ सू. ४१ / मं.४)

ओ३म् भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह ॥

कविता भाव

अमृतमय सुखद बेला में, शुभ कर्मो का ध्यान धरें ।
जीवन में ऐश्वर्य भरो प्रभू अमृतरस का पान करें ॥
हम सब हो सौभाग्यवान प्रभू धरते रहें तुम्हारा ध्यान ।
सब जग के उपकारी होवें, ऐसी कृपा करो भगवान ॥
'केवल' ओ३म् नाम ही ध्यावे, जीवन सफल करो गुणवान ।
ऋषि शिक्षा में चल कर अपना परोपकार में देवें दान ॥

ईश्वर वंदना स्तोत्र

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

कविता भाव

मात तुही गुरु तात तुही मित भ्रात तुही धन-धान हमारे ।
ईश तुही जगदीश तुही मम शीश तुही प्रभू राखन हारे ।

राव तुही उमराव तुही, सद्‌भाव तुहीं जग तारन हारे ।
सारः तुही करतार तुही, घरबार तुहीं परिवार हमारे ॥

नमस्कार मंत्र :

नमस्ते सते ते जगत् कारणाय नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोऽद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥
नमस्ते निराकार निर्गुण निरूपम् ।
नमस्ते शिवं सत्य सुंदर स्वरुपम् ॥
नमस्ते अगोचर अगम ओजदायक ।
नमस्ते निरंजन निगम-नीति नायक ॥
नमस्ते महेश्वर महा मोक्षदाता ।
नमस्ते विभू विश्व व्यापी विधाता ॥
नमस्ते सदा सच्चिदानन्द स्वामी ।
नमस्ते नियन्ता भवानी नमामी ॥

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं,

त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।

त्वमेकं जगत्कर्तृपातृप्रहर्तृ,

त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥

कविता भाव

हे वंदनीय ईश्वर! तेरी शरण में आया ।

तू है स्वयं प्रकाशित, तेरी त्रिलोक माया ॥

जग के तुम्ही जनक हो, पालक विनाशकारी ।

हे नाथ! अब दया कर, सुधि वेग लो हमारी ।

भयानां भयं भीषणं भीषणानां, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानां ।

महोच्चै पदानां नियन्तृत्वमेकं, परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥

कविताभाव

भीषण तुझ से भीत, और भय भी भय खावे ।

जीवन को गतिशील, रसज्ञ पवित्र बनावे ॥

सर्वोपरि सर्वेश सच्चिदानन्द स्वरुपम् ।

रक्षण के रखवार सभी में दिव्य अनुपम् ॥

वयं त्वां स्मरामो वयं त्वाम भजामो,

वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं नमामः ।

सदेकं निधानं निरालम्बमीशं,

भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजाम ।।

कविता भाव

सुमरन, भजन, साधना द्वारा तुमसे नेह लगाऊँ ।

घट-घट व्यापी की छाया में श्रेय मार्ग पर जाऊँ ॥

एकमात्र अवलम्ब सभी का, है तू आश्रय दाता ।

तेरे नाम निगम-नौ से भव सागर तर जाता ॥

(अनुवाद. पूज्य स्वामी भवानीदयालजी वैदिक व्याख्याता)

ओ३म् असतो मा सद्गमय ।

तमसो मा ज्योतिर्गमय ।

मृत्योर्माऽमृतं गमयेति ।।

कविताभाव

हो असत् से दूर भगवन, सत्य का वरदान दो ।

दूर कर द्रुत तिमिर भगवन, शुभ्र-ज्योति विहान दो ॥

मृत्यु-बन्धन से हटा, अमरत्व हे भगवान दो ।

प्रकृति-पाशों से छुडा आनन्द-मधु का पान दो ॥

(अनु.पं.द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री मेरठ)

ओ३म् शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा ।

शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥

कविताभाव

तुम्ही ब्रह्मा तुम्ही विष्णु, तुम्ही इन्द्र अविनाशी ।

बृहस्पति अर्यमा तुम ही, वरुण वर मित्र सुखराशी ॥

ऋतम् सत्यम् से तूने सृष्टि को सम्यक संवारा है ।

तेरे अलोक से भगवन, प्रकाशित लोक सारा है ॥

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकम् ।

नेमा विद्युत तो भान्ति कुतोऽयमग्निः ।

तमेव भान्तमनुभाति सर्वम् ।

तस्य भासा सर्वमिंद विभाति ॥

कविता भाव

जग के प्रकाश सारे तुझ से प्रकाश पाते ।

रवि-चंद्र और वह तारे, नभ में चमक दिखवाते ॥

तू है स्वयं प्रकाशित, अद्‌भुत प्रकाश तेरा ।

अपनी प्रभा दिखवावे, जग से मिटे अंधेरा ॥

ओ३म् स ब्रह्मा स विष्णु, स रुद्रस्स शिवस्सऽक्षरस्स ।

परमः स्वराट् । स इन्द्रस्स कालाग्निस्स चन्द्रमाः ॥

कविता भाव

ब्रह्मा स्वराट तू ही तू इन्द्र भी कहाता ।
तू विष्णु सर्वव्यापी, हो चंद्र जगमगाता ॥
कालाग्नि, रुद्र अक्षर, शिव इष्टदेव मेरे ।
तुम एक ही हो भगवन! परम नाम है घनेरे ॥

ओ३म् सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥

कविता भाव

भगवन! आज विषद का मारा मैं तेरे ढ़िग आया हूँ ।
जीवन के संग्राम क्षेत्र में अगनित ठोकर खाया हूँ ।
ओज-तेज बल-वीर्य ज्ञान-गुण से हम को मंडित कीजे ।
साम्यभाव, सुंदर समाज, सुखदायक सत्संगति दीजे ॥

ओ३म् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ।
बलमसि बलं मयि धेहि । ओजोऽस्योजो महि धेहि ॥
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि । सहोऽसि सहोमयि धेहि ॥

कविताभाव

हे तेजवन्त भगवन! मुझ में तेज भर दो ।
ब्रह्मांड वीर्य! मुझ को भी वीर्यवान कर दो ॥
बल-वीर्य के विधायक! मुझ को बली बनाओ ।
हे ओज के अधीश्वर! निज ओज से सजाओ ॥
पुरुषत्व रोष पावन, सहने की शक्ति दीजे ।
अपने सभी गुणों से, परिपूर्ण नाथ कीजे ॥

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतस्स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै -
वेदैस्साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ॥
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनासा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥

कविताभाव

ब्रह्मा, वरुण, रुद्र, मारुत सब जिसकी गाथा गाते ।
वेद और उपनिषद कथा कीर्तन से नहीं अघाते ॥

मानस-दर्शन के हित जिसका योगी ध्यान लगाते ।
उसी ओ३म् अधिनायक को हम सादर शीश नवाते ॥
(अनु. पू.स्वामी भवानीदयालजी वैदिक व्याख्याता)

ओ३म् यस्ये मे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः ।
यस्येमा प्रदिशो यस्य बाहुः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

कविताभाव

हिम आवृत ये उन्नत पर्वत जिसकी महिमा गाते हैं ।
ये समुद्र भी उछल-उछल कर गुण जिसके बतलाते हैं ॥
चित्र-विचित्र दिशायें जिसकी महिमा का है करती गान ।
दसों दिशायें जिस विराट की है बलशाली भुजा समान ।
भक्तिभाव की भेटें लेकर उन चरणों तक जाते हैं ।
श्रद्धापूर्वक सुख सागर के आगे शीश झुकाते हैं ।
(पं.धर्मवदजी विद्यामर्तण्ड)

संगठन सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥१॥

हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हे हैं कीजिये धन वृष्टि को ॥

ओ३म् संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥१॥

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्तव्य के मानी बनो ॥२॥

ओ३म् समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मंत्रमभि मंत्रये वःसमानेन वो हविषा जुहोमि ॥३॥

हों विचार समान सब के चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों ॥३॥

ओ३म् समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥४॥

हो सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ॥४॥

राष्ट्रीय वेद प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् ।

आराष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् ।

दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानशुः सप्तिः,

पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जयताम्।

निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु,

फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्ताम्,

योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

(यजु : २२ । २२)

कविता भाव

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र में हो द्विज ब्रह्म तेज धारी ।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी ॥

होवें दुधारू गौएँ, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ॥

बलवान सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें ॥

फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी ।
हों योग क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

❋❋❋

यज्ञ प्रार्थना

यज्ञरूप प्रभो हमारे भाव उज्वल कीजिये ।

छोड देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिये ॥१॥

वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें ।

हर्ष में हों मग्न सारे शोक-सागर से तरें ॥२॥

अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर-उपकार को ।

धर्म-मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ॥३॥

नित्य श्रद्धा - भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें ।

रोग-पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें ॥४॥

भावना मिट जाय मन से पाप-अत्याचार की ।

कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारी की ॥५॥

लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिए ।

वायु-जल सर्वत्र हों शुभ गंध को धारण किये ॥६॥

स्वार्थ-भाव मिटे हमारा, प्रेम-पथ विस्तार हो ।

'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥७॥

हाथ जोड़ झुकाये मस्तक वंदना हम कर रहे ।

'नाथ' करुणारूप करुणा आपकी सब पर रहे ॥८॥

(लोकनाथ तर्कवाचस्पति)

***

मंगल कामना

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय ।

यह अभिलाषा हम सब की भगवन पूरी होय ।

विद्या बुद्धि तेज बल सब के भीतर होय ।

दूध-पूत धन-धान्य से वंचित रहे न कोय ।

आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर ।

राग-द्वेष से चित मेरा, कोसों भागे दूर ॥

मिले भरोसा ओ३म् का हमें सदा जगदीश ।

आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश ॥

हमें बचाओ पाप से, करके दया दयाल ।

अपना भक्त बनाय के हमको करो निहाल ॥

दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार ।

धैर्य हृदय में धीरता, सब को दो करतार ॥

नारायण तुम आप हो, पाप के मोचन हार ।

क्षमा करो अपराध सब, कर दो भय से पार ॥

हाथ जोड़ विनंती करूँ सुनिये कृपानिधान ।

साधु-संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान ॥

***

ओ३म् वंदन प्रार्थना

ओ३म् है जीवन हमारा ओ३म् प्राणाधार है ।
ओ३म् है कर्ता विधाता ओ३म् पालनहार है ॥
ओ३म् है दुःख का विनाशक ओ३म् सर्वानन्द है ।
ओ३म् है बल-तेजधारी, ओ३म् करुणानन्द है ।
ओ३म् ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें ॥
ओ३म् सबका पूज्य हम ओ३म् का चिंतन करें ॥
ओ३म् के गुरु मंत्र जपने से रहेगा शुद्ध मन ।
बुद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन ॥
ओ३म् के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायगा ।
अंत में यह ओ३म् हमको, मुक्ति तक पहुँचायगा ॥

***

ओ३म् नाम रस पीजे

मनवा ओ३म् नाम रस पीजे । मनवा ओ३म् नाम रस पीजे ।
तज कुसंग सत्संग बैठ नित, प्रभू चर्चा सुन लीजे ॥

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह को, बहा चित्त से दीजे ।
संध्या हवन गायत्री जपकर, मन निर्मल कर लीजे ॥

मैं तो प्रभू के ओ३म् ही रंग में, तांही से रंग भीजे ।
और रंग सब बेरंग प्यारे ओ३म् ही ओ३म् भज लीजे ॥

"केवल" ओ३म् नाम ही प्रभू का अमृत रस कर पीजे ।
भवसागर से पार उतरना है, वैदिक पथ धर लीजे ॥

***

गायत्री महामंत्र में बल-बुद्धि प्रार्थना

बल देना बुद्धि देनाऽऽ जीवन संवार देना ।
हे ओ३म् सब के स्वामी मुझे अपना प्यार देना ॥१॥

सूर्य चंद्र यह सितारे, करते यही इशारे ।
मालिक मेरा वही है, जिसके हैं ये पसारे ।
मेरी याचना यही है, जीवन सुधार देना ॥२॥

नदियाँ पहाड़ जंगल, करामात है तुम्हारी ।
दिन रात की है गाड़ी, लाखों चढ़े सवारी ॥
मंजिल से पहले ही ना, मुझको उतार देना ॥३॥

है अनंत महिमा तेरी, ऋषियोंने यह बताया ।
चरणों में सिर झुका कर, तेरे गुणों को गाया ॥
मेरी प्रार्थना यही है, भक्ति का दान देना ॥४॥

"केवल" तेरे सहारे, जीव-जंतु हैं ये सारे ।
गुणगान गा रहे हैं, दिन-रात ये तुम्हारे ॥
प्रभु भव से पार करना, मुक्ति का धाम देना ॥५॥

बल देना बुद्धि देनाऽऽ जीवन संवार देना ।
हे ओ३म्! सब के स्वामी, मुझे अपना प्यार देना ॥

❊❊❊

अमृत पीवे कोई कर्मोंवाला

ओ३म् तेरी प्रीति का सुख है निराला ।
अमृत पीवे कोई कर्मों वाला ॥धृ॥

ओ३म् तेरे दर का जो होगा भिखारी ।
आशा तृष्णा मिटे सब संसारी ॥
प्रभु चरणों में मन होवे मत वाला ॥१॥ अमृत...

प्रेम का दीपक प्रेम की बाती ।
जगमग ज्योति जले दिन राती ॥
मन मंदिर में प्रभु करो उजियाला ॥२॥ अमृत...

तेरे बिना प्रभुजी, और न कोई ।
तेरी कृपा बिन घर न कोई ॥
साफ करो मेरा मन है मैला ॥३॥ अमृत...

ओ३म् प्रभु का लेके सहारा ।
भवसागर से उतरे पारा ॥
मिला है दाता दीन दयाला ॥४॥ अमृत...

वेद की वाणी है कल्याणी ।
जीवन सफल करे मनमानी ॥
ओ३म् ही नैया तारणहारा ॥५॥ अमृत...

"केवल" नाम प्रभु का भजवा ।
ओ३म् ही ओ३म् जपो मेरे मनवा ॥
संकट हरण मनोरथ वाला ॥६॥ अमृत...

❋❋❋

ओ३म् कीर्तन गान

(तर्ज-जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये)

जय ओ३म् जय ओ३म्, जय ओ३म् कहिये ।
जाँहि विधि कियो कर्म, फल ताँहि पाहिये ॥टेर॥

मुख में हो ओ३म् नाम, ओ३म् सेवा हाथ में ।
तू अकेला नहीं प्यारे, ओ३म् तेरे साथ में ॥
कर्मों का विधान जान, हानि-लाभ सहिये ।
जाँहि विधि कियो कर्म, फल ताँही पाईये ॥१॥

किया अभिमान तो मान नहीं पायेगा ।
होगा प्यारे वही जो, प्रभुजी को भायेगा ॥
फल-आशा त्याग, शुभ काम करते जाईये ।
जाँहि विधि कियो कर्म फल ताँही पाईये ॥२॥

जिन्दगी की डौर सौंप हाथ दीनानाथ के ।
महलो में राखे चाहे, झोपडी में वास दे ॥
धन्यवाद, निर्विवाद, ओ३म्-ओ३म् कहिये ।
जाँहि विधि कियो कर्म, फल ताँही पाईये ॥३॥

आशा एक प्रभुजी से, दूजी आशा छोड दे ।
जपो एक ओ३म् नाम, इससे नाता जोड़ दे ॥
साधु संग ओ३म् रंग, अंग-अंग रंगिये ।
काम रस त्याग प्यारे, ओ३म् रस पगिये ॥४॥

वेदवाणी प्रभु की है भूल नहीं जानिये ।
ओ३म् ही है सत्य नाम, निर्विरोध मानिये ॥
जपो नित सुबह-शाम, यही टेर भाकिये ।
"केवल" ओ३म् नाम प्यारे सदा मुख राखिये ॥५॥

***

महामंत्र गायत्री वंदना

वर दो! वर दो! वर दो! वेद माँ गायत्री वर दो!

आवे संकट तीक्ष्ण घने रे ।
रोके शूल पड़ पथ मेरे ॥
किन्तु बहु सरिता सा वेद मां! ऐसा बल भर दो!
हृदय दीप्त कर दो ॥१॥ वर दो...

अंधकार में व्याकुल मन है ।
भौतिकता से तापित तन है ॥
करुणा की किरणों से हे प्रभू अंतर मन भर दो ।
ज्योतिर्मय कर दो ॥२॥ वर दो...

लक्ष्य न आँखो से ओझल हो ।
भक्त तेरा ही यह 'कश्यप' हो ॥
मेरे प्राणों की वीणा में वैदिक स्वर भर दो ।
मन निर्मल करदो ॥३॥ वर दो...

वर दो! वर दो! वर दो वेद माँ गायत्री वर दो!

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तांम् पावमानी द्विजानाम् ।

आयुः, प्राणं, प्रजां, पशुं, कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसं, मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

ओ३म् ईश्वर है जगत में, पावमानी वेद माता ।
कर प्रकाशित द्विजों को, निश-दिन चिताता ।
प्राण जीवन, पशु, प्रजा, यश द्रव्य मिलते ।
ब्रह्मवर्चस प्राप्त करके हृदय कमल हैं खिलते ।

कर समर्पण इन सभी को ओ३म् ईश्वर के प्रति ।
मुक्ति का आनन्द पाते, ऋषि, ज्ञानी और व्रतपति ॥

(ब्रह्मदतजी सोढा)

गायत्री मंत्र महिमा

एक जड़ी हमारे पास है, जिससे सब रोग कटे हैं ।
मूल का नाम ओ३म् है भाई-गायत्री डण्डी कहलाई ।
जप-तप टहनी पर छबि छाई, नियम बाग में वास है ।
फल की नहीं चमक घटे है ॥१॥

नियम धर्म के पत्र कहाते, सत् के फूल खिले लहराते ।
प्राणायाम के फल मन भाते, मिट जाता सब त्रास है
नहीं सन्मुख पीड़ डटे है ॥२॥

दिल का खरल सफाई तन की, बुद्धि का रगड़ा मुसली मन की ।
संध्या प्रातः समय घोटन की, मूल संजीवन खास है ॥
असाध्य त्रिदोष हटे हैं ॥३॥
तीनों ताप पास नहीं आवे, तीनों पाप शीघ्र नस जावे ।
घीसाराम यह छंद कथ गावे, ईश्वर भक्त महान है ॥
एक ब्रह्म का नाम जपे है ॥४॥

विशेष - गायत्री मंत्र जप के लिये तीनों व्याहृति में ओ३म् लगाकर जपने से चार बार ओ३म् प्रभु का नाम आता है.

(स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज)

ओ३म् भूः ओ३म् भुवः ओ३म् स्वः ओ३म्-तत्सवितुर्वरेण्यम् ।
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

इस प्रकार जाप से ४४४ बार ओ३म् पवित्र नाम आता है. ११ माला में ४८८४ बार ओ३म् नाम का उच्चारण होता है. ऐसा भी जाप विधान है.

***

महामंत्र गायत्री महिमा

जप ले! गायत्री बावरिया गति सुधरे!
तेरी गति सुधरे, तेरी मति सुधरे ॥ जप ले...

सुख स्वरुप व्यापक कण-कण में जगदीश्वर अविनाशी ।
पकड़ सहारा उसी प्रभू का, कटे दुःखों की फांसी ॥
चलना धरम की डगरिया ॥२॥ तेरी गति सुधरे...

ऋषि मुनि और सत् पुरुषोंने, इसी मंत्र को ध्याया ।
गायत्री को जप कर अपना, जीवन सफल बनाया ।
भर लो ज्ञान की गगरिया ॥३॥ तेरी गति सुधरे...

एकान्त स्थान में मन को वश कर, गायत्री को जपना ।
जग के झंझट त्याग बना ले, एक प्रभु को जपना ॥
रखना काल की खबरिया ॥४॥ तेरी गति सुधरे..

संतान कीर्ति आयु स्वास्थ्य अरु बल बुद्धिधन पावो ।
गायत्री से मुक्ति मिलेगी, ब्रह्म लोक में जाओ ॥
सुख से बीतेगी उमरिया ॥५॥ तेरी गति सुधरे...

झूठ कपट को त्याग 'अभय' शुभ कर्म कमाई कर ले ।
बैठ धर्म की नैया में तू, भवसागर से तर ले ॥
जाना प्रभु की नगरिया ॥६॥ तेरी गति सुधरे...

***

ओ३म् नाम के हिरे मोती

ओ३म् नाम के हीरे-मोती, मैं बिखराऊँ गली-गली ।
ले लो रे कोई ओ३म् का प्यारा आवाज लगाऊँ गली-गली ।

माया के दीवानो सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा ।
धन दौलत और रूप खजाना, धरा यहाँ रह जायेगा ।
सुंदर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली ॥२॥

क्यों करता है मेरी-मेरी, तज दे इस अभिमान को ।
छोड़ जगत के झूठे धंदे, जप ले ओ३म् के नाम को ॥
गया समय फिर हाथ न आवे, फिर पछताये घड़ी-घड़ी ॥३॥

जिसको तू अपना कहकर तू इतना इतराता है ।
छोड दे बंदे साथ विपद में, साथ कोई नहीं जाता है ॥
दो दिन का है रैन बसेरा, आखिर होगी चला-चली ॥४॥

मित्र और प्यारे सगे संबधी एक दिन तुझे भुलायेंगे ।
कल तक तो कहते थे अपना, अग्नि में तुझे जलायेंगे ॥
दो दिन का है चमन खिला, फिर मुरझाये कली-कली ॥५॥

'केवल' ओ३म् का नाम ही प्यारे अंत समय में गायेगा ।
मुक्ति होगी निश्चय तेरी, भवसागर तर जायेगा ॥
मूरख बाते सुन ले मेरी, राह बताऊँ भली-भली ॥६॥

ओ३म् नाम के हीरे-मोती मैं बिखराऊँ गली-गली ।
ले लो रे कोई ओ३म् का प्यारा आवाज लगाऊँ गली-गली ।

***

ओ३म् प्रभु से प्यार नहीं

ओ३म् प्रभु से प्यार नहीं, शुद्ध रहा ब्यौपार नहीं ।
इसीलिये तो आज देख लो सुखी कोई परिवार नहीं ॥१॥

फल और फूल अन्न इत्यादि, समय-समय पर देता है ।
लेकिन आश्चर्य यही बदले में, कुछ नही लेता है ॥
करता है इन्कार नहीं, भेद भाव तक्रार नहीं ।
ऐसे दानी का ऐ मानव, माने तू उपकार नहीं ॥२॥

मानव चोले में न जाने, कितने यंत्र लगाये हैं ।
कीमत कोई माप सका नहीं, ये अमूल्य बनाये हैं ।
कोई चीज बेकार नहीं, पा सकता कोई पार नहीं ।
ऐसे शिल्पकार का मानव, करता जरा बिचार नहीं ॥३॥

जलं वायु और अग्नि का वह लेता नहीं किराया है ।
सर्दी-गर्मी और वर्षा का, सुंदर चक्र चलाया है ।
लगा कहीं दरबार नहीं है, है कोई पहरेदार नहीं ।
कर्मों का फल देत सभी को, रिश्वत की सरकार नहीं ॥४॥

सूरज-चाँद सितारों का कहाँ बिजली घर है बना हुआ ।
पल भर का धोका नहीं देता, कहाँ कनेक्शन लगा हुआ ।
खम्बा कोई तार नहीं, खड़ी कहीं दिवार नहीं ।
ऐसे कलाकर का ये मानव, क्यों करता विचार नहीं ॥५॥

मानव जन्म अमोलक प्यारे शुभ कर्मों का सार यही ।
ओ३म् नाम है प्रभू का प्यारा वेदों का संदेश यही ।
देव दयानन्द ने बतलाया 'केवल' ओ३म् का सार यही ।
प्रातः सायं भज लो प्रभु को क्यों करता तू विचार नहीं ॥६॥

***

नमस्ते गौरव गान

नमस्तेजी! नमस्तेजी! नमस्तेजी! नमस्तेजी!
आदि काल से रीत यही है करो नमस्तेजी-नमस्तेजी ॥१॥

वेदों में ही इसको गाया, ऋषिमुनियों ने यही बताया ।
देश-विदेश कहीं पर जावो, करो नमस्तेजीऽ नमस्तेजी ॥२॥

रामायण भी यही बताती, गीता भी इसके गुण गाती ।
महाभारत भी यही सिखाती, करो नमस्तेऽ नमस्तेजी ॥३॥

राम-कृष्ण वेदों के पुजारी, जिनको जाने दुनिया सारी ।
उनकी आज्ञा को अपनाओ, करो नमस्तेजी नमस्तेजी ॥४॥

हिन्दु-सिख अरु यवन इसाई, मिले मित्र ओरु भाई-भाई ।
आदर प्रेम की श्रेष्ठ विधि है, करो नमस्तेजी नमस्तेजी ॥५॥

जो चाहते हो भव से तरना, राग-द्वेष छल कपट न करना ।
उलटा रास्ता छोड़ के चलना सीधा रास्ता जी, नमस्तेजी ॥६॥

प्यारे कष्ट मुसीबत सहना संघर्षो से कभी न डरना ।
सुख हो या दुःख हर हालत में रहना हँसते जी, नमस्तेजी ॥७॥

ऋषि शिक्षा का पालन करना, वेद ज्ञान को चित्त में धरना ।
अभिवादन ही एक नमस्ते, करते जाना जी नमस्ते जी नमस्तेजी ॥८॥

'केवल' ओ३म् नाम को जपना, मन बुद्धि को चित्त में धरना ।
मात-पिता अरु गुरु चरणों में वंदन करना जी नमस्तेजी नमस्तेजी ॥९॥

***

ओ३म् कीर्तन इक्कीस।

जय ओ३म् जयओ३म् जय-जय ओ३म् ।
भज प्यारे तू जय-जय ओ३म् ॥ध्रुपद॥

करुणा सागर जय-जय ओ३म् ।
दीनदयालू भज मन ओ३म् ॥१॥

ईश्वर प्रभूजी नाम ही ओ३म् ।
सब को सद्‌बुद्धि देवो ओ३म् ॥२॥

सृष्टि नियन्ता जय-जय ओ३म् ।
सत् चित्त आनन्द भज मन ओ३म् ॥३॥

निराकार तू जय-जय ओ३म् ।
सर्वशक्तिमान भज मन ओ३म् ॥४॥

न्याय नियन्ता जय-जय ओ३म् ।
अनन्त अनादि अनुपम ओ३म् ॥५॥

सर्वाधार सर्वेश्वर ओ३म् ।
अजर-अमर अविनाशी ओ३म् ॥६॥

जगत पिता परमेश्वर ओ३म् ।
जगदाधार तू भज मन ओ३म् ॥७॥

शांति प्रदाता जय-जय ओ३म् ।
करुणा मय तू भज मन ओ३म् ॥८॥

सुखदाता दुःख हरता ओ३म् ।
मन मंदिर में ध्याओ ओ३म् ॥९॥

प्राणायाम से देखो ओ३म् ।
अंतर ज्योति जगाओ ओ३म् ॥१०॥

मुक्ति दायक जय-जय ओ३म् ।
जनम मरण दुःख नाशक ओ३म् ॥११।

बुद्धिप्रकाशक जय-जय ओ३म् ।
जीवन पालक भज मन ओ३म् ॥१२॥

ब्रह्मज्ञान प्रसारक ओ३म् ।
ऋषि-मुनि-ज्ञानी भज मन ओ३म् ॥१३॥

अग्निवायु ऋषि जपते ओ३म् ।
आदित्य अंगिरा भजते ओ३म् ॥१४॥

ऋग-यजु-साम-अथर्वा ओ३म् ।
कालान्तक परमेश्वर भज ओ३म् ॥१५॥

प्रलयान्तर सुस्थित ओ३म् ।
जगन्नियन्ता पालक ओ३म् ॥१६॥

भक्तप्रिय सुख दायक ओ३म् ।
कर्मा॑व्रत फलदायक ओ३म् ॥१७॥

अद्भुत तेजो बलयुत ओ३म् ।
वेद चतुष्टय दायक ओ३म् ॥१८॥

नित्य निरंजन निरुपम ओ३म् ।
जन्म रहित-जन्म प्रद ओ३म् ॥१९॥

विश्व रचियता जय-जय ओ३म् ।
विश्वकर्मा त्वष्टादिक ओ३म् ॥२०॥

'केवल' विनय करे कर जोड ।
ओ३म् भक्ति करो छल छोड़ ॥२१।

जय ओ३म् जय ओ३म् जय-जय ओ३म् ।
भज प्यारे तू जय-जय ओ३म् ॥

***

देव यज्ञ की महिमा

अन्नाद् भवन्ति भूतानि, पर्जन्यादन्नसम्भवः ।

यज्ञाद् भवति पर्जन्यः यज्ञ कर्म समुद्भवः ॥

प्राणिमात्र का पोषण अन्न द्वारा होता है, अन्न वर्षा द्वारा होता है, वर्षा यज्ञ द्वारा होती है, यज्ञ वेद मंत्रो द्वारा ही होता है, वेद ईश्वर की शाश्वत वाणी है.

कविता भाव

लिखा गीता में विधान, अद्‌भुत है महिमा हवन की ।

जो वस्तु अग्नि में जलाई, हलकी होकर वो उपर को उडाई ॥

करे वायु से मिलान, मेरे भाईयो, जाती है रस्ता गगन की ॥१॥ लिखा...

फिर आकाश मंडल में जाई, पानी की होत सफाई ।

वृष्टि हो अमृत समान मेरे भाईयो, वृद्धि हो अन्न और धन की ॥२॥ लिखा...

जब अन्न वृद्धि होती है, सब प्रजा सुखी होती है ।

न रहता दुःख का निशान, मेरे भाईयो, आ जाती है लहर अमन की ॥३॥

जब से यह यज्ञ छुटा है, भारत का भाग्य लुटा है ।

करो रे फिर यज्ञ महान, मेरे भाईयो, क्यों सहते हो मार दुःखन की ॥४॥

ऋषिने यज्ञ तत्व बताया, वेदों का प्रमाण दिखाया ।

सुखी हो प्राणी जहान मेरे भाईयो, शांति हो जगभर की ॥५॥

लिखा वेदों में विधान अद्‌भुत है, महिमा हवन की ।

❋❋❋

ब्रह्मयज्ञ-संध्या की महिमा

संध्या से मैंने महानन्द पाया ।

संध्या से मन का चापल्य मिटाया ॥१॥

प्राणायाम से प्राण संचय बनाया ।

रेचक व कुंभक से मन बल बढाया ॥२॥

संध्या से फूला हृदय रूप पंकज ।

उसे शांत निर्मल सुधारस पिलाया ॥३॥

संध्या से भीतर जगी दिव्य ज्योति ।

जीवन का दीपक उसी से जगाया ॥४॥

संध्या से जलधार वर्षी चहुँ ओर ।

शुभशांत धारा में गोता लगाया ॥५॥

किया कंठ शोधन सुजल आचमन से ।

स्पर्श इंद्रियों का किया बल बढ़ाया ॥६॥

प्राची से उर्ध्वा दिशा तक निरंतर ।

विभिन्नास्त्र धर ईशरक्षक बनाया ॥७॥

उपस्थान से ब्रह्मद्वारे पहुंचकर ।

सुखी दीर्घ आयु का वर मंत्र पाया ॥८॥

गुरु मंत्र से तेजो बल प्राप्त कर के ।

विशद मार्ग पर देह का रथ चलाया ॥९॥

श्रद्धा से सर्वस्व भेंट चढ़ाकर ।

निज 'नाथ' शंकर को मस्तक नवाया ॥१०॥

जीवात्मा-परमात्मा के वियोग में

परम पिता परमात्मा, जग के रचनेहार ।

नाव भंवर मे फंस रही कर दो भव से पार ।

व्याकुल है यह आत्मा हे जग के पालन हार ।

कृपा करो परमात्मा, 'केवल' आस तुम्हारी निहार ॥

प्रार्थना

अंधेरा दूर कर भगवन, तेरी ज्योति जगा मन में ।

अज्ञान का पर्दा हटा दीजे, झुके यह शीश चरणों में ॥१॥

हजारों साल से मेरा, ये मन मंदिर पड़ा सूना ।

मेरे हृदय में बस जावो, तेरी ज्योति जगे मन में ॥२॥

हटा दो जाल माया का, बुझा दो द्वेष की ज्वाला ।

निर्मल मन को कर दीजे, तेरी ज्योति जगे मन में ॥३॥

तेरी रचना को जब देखूँ, उसी क्षण हो तेरा चिंतन ।

पिला दो प्रेम प्याला, तेरी ज्योति जगे मन में ॥४॥

यही है भावना भगवन, मेरा जीवन ही निर्मल हो ।

सदाचारी व परोपकारी, सदा वेदचारी वाला हो ॥५॥

विनय 'केवल' की सुन लीजे, दयामय आशा है तेरी ।

जगत् के पाखंडों से निकले, तेरी ज्योति जगे मन में ॥६॥

अंधेरा दूर कर भगवन, तेरी ज्योति जगे मन में ।

अज्ञान का पड़दा हटा दीजे, झुके शीश चरणों में ॥७॥

❋ ❋ ❋

श्रीराम एवं श्रीकृष्ण को भगवान क्यों कहते हैं ?

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, धर्मस्य यशसः श्रियः ।

ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणाः ॥

भावार्थ - संपूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य इन छः का नाम भग है. इसमें से जिनके पास एक भी भग हो तो भी उन्हें भगवान कहा जा सकता है. श्री मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम एवं योगेश्वर श्रीकृष्ण चंद्र के पास तो सारे ही भग अर्थात् ऐश्वर्य थे, इसीलिये उन्हें भगवान कह कर प्रायः पुकारा जाता है. वे भगवान तो थे, परंतु वे ईश्वर नहीं थे. न ही वे ईश्वर के अवतार थे. वह एक महामानव थे.

यदि हम उन्हें एक महापुरुष मान कर उनके जीवन का अनुकरण करें तो हमारा मनुष्य जीवन सफल होगा.

श्रीराम के भक्तों से प्रश्न

रामने तजा था राज, पिता के कथन काज ।

तुम मात-तात, बात धूल में मिलाते हो ॥१॥

रामने निषाद आदि भीलों को लगाया गले ।

तुम कह पतित पैरों से, ठुकराते हो ॥२॥

रामने किया था सती, सीता हित घोर युद्ध ।

तुम लाल-लालना लुटेरों से लुटवाते हो ॥३॥

एक भी न काम-धाम, राम से "प्रकाश" ।

किस बिरते तर भक्त राम के कहलाते हो ॥४॥

❋❋❋

राष्ट्रीय श्रीराम कीर्तन

रघुपति राघव राजा राम, दशरथ नंदन आर्यमहान ।
जय ओ३म् जय-जय ओ३म्, भज प्यारे तू ओ३म् ही ओ३म् ॥धृ.॥
ईश्वर प्रभुजी तेरा नाम, सबको सद्बुद्धि दो भगवान ।
केशव, माधव दीनदयाल, कृष्ण कन्हैया प्रिय गोपाल ॥१॥

भारत भक्ति दो भगवान, राम-लखन से हो बलवान ।
महावीर स्वामी बलिहार, अहिंसा व्रत धरौ नर-नार ॥
जय ओ३म् जय-जय ओ३म् भज प्यारे तू ओ३म् ही ओ३म् ॥२॥

गोरक्षाहित दे दो प्राण, तब भारत का हो उत्थान ।
अहिंसा की होती जयकार, पर हिंसा की है भरमार ॥
जय ओ३म् जय-जय ओ३म् भज प्यारे तू ओ३म् ही ओ३म् ॥४॥

भारत माता करे पुकार, बंद करो रे! गो संहार ।
"गोकरुणानिधि" से ऋषि दयानन्द के उद्गार ।
जय ओ३म् जय-जय ओ३म् भज प्यारे तू ओ३म् ही ओ३म् ॥५॥

राम भक्त हनुमान महान, शिव-प्रताप से वीर सुजान ।
गुरुनानक का है फरमान, गोरक्षा का रखना ध्यान ।
जय ओ३म् जय-जय ओ३म् भज प्यारे तू ओ३म् ही ओ३म् ॥६॥

रघुपति राघव राजाराम, दशरथ नंदन आर्य महान ।
'केवल' विनय करे कर जोड़, ओ३म् भक्ति करो छल छोड़,
जय ओ३म् जय-जय ओ३म् भज प्यारे तू ओ३म् ही ओ३म् ॥७॥

❋❋❋

आदर्श गृहस्थ आश्रम

सानंद सदनं सुताश्च सुधियः कान्ता च मृदुभाषणी ।

सन्मित्रं सुधनं सुयोषितिरतिश्चाज्ञा परा सेवका ॥

अतिथिशिवपूजनम् प्रति-दिनं, मिष्टानपानं गृहे

साधोः संगमुपासते ही सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः ॥

कविता भाव

आनन्द दायक घर बने, बुद्धिमान संतान ।
गृहणी हो मृदुभाषिणी, मित्र सत्य गुणवान ॥
पवित्र कमाई धन भला, शुभचिंतक दरबान ।
अतिथि सेवा भली, शिव पूजन, कल्याण ॥
मिठा भोजन घर बने, करे परिश्रम जान ।
साधू संतन आगमन, धन्य गृहस्थी का धाम ।
'केवल' प्रभु का नाम है, ओउम् नाम चितलाय ॥
हे मानव भज प्रेम से, भवसागर तर जाय ।

❋❋❋

ओ३म् जप-बावरे

ओ३म् जप, ओ३म् जप, ओ३म् जप बावरे ।

ओ३म् जप जाप से पार लगे नावरे ॥१॥

जगन्निर्माता पालन करता, सुखदाता है संकट हरता ।

तात मात भ्रात सखा, एकमात्र टाबरे (बच्चा) ॥२॥ ओ३म् जप...

जीवन में शुभ कर्म कमा ले, परम पिता के गुण तू गावरे ।

ओ३म् ले जायगा मुक्ति पर धामरे ॥३॥ ओ३म् जप...

सुख में प्रभु को भूल न जाना दुःख आये तो न घबराना ।

दुःख सुख कर्म भोग, धूप-कभी छाँवरे, ॥४॥ ओ३म् जप...

ओ३म् नाम को ऋषिने उच्चारा, वेदों की अमृत धारा ।

जपो नित सुबह शाम, 'केवल' ओ३म् जाप रे ।

ओ३म् जप, ओ३म् जप, ओ३म् जप बावरे ।

ओ३म् जप जाप से पार लगे नाव रे ॥५॥

❋ ❋ ❋

भजन भक्त सूरदास

तजो रे मन हरि विमुख को संग।

जिनके संग कुमति उपजत, परत भजन भंग॥

कहाँ होत पय पान कराये, विष नही तजत भुजंग।

तजो रे मन हरि विमुख को संग॥१॥

कागही कहा कपूर चुगाये, स्वान नवाये गंग,

तजोरे मन हरिविमुख का संग॥२॥

खर को कहाँ अरगजा लेपन, मरकट भूषण अंग।

तजोरे मन हरि विमुख के संग॥३॥

गज को कहाँ न्हावे सरिता, बहुरिथेरे खहि छंग।

तजो रे मन हरि विमुख को संग॥४॥

पाहन पतित बाँस नही बेघत रीतो करत निषंग।

तजोरे मन हरि विमुख को संग॥५॥

सूरदास, खलकारी कमरिया, चढ़न दूजो रंग।

तजो रे मन हरि विमुख को संग॥६॥

जिनके संग कुमति उपजत, पड़त भजन में भंग।

❋❋❋

ईश-प्रार्थना

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद भद्रं तन्न आ सुव ।।यजुर्वेद ३०/३।।

(कविता भाव)

प्रभूजी! मोरे दुर्गुण दूर करो
दयालू मोरे संकट दूर करो ॥धृ॥
करिये कृपा निधि मोरे
सद्गुण सकल भरो ॥१॥ प्रभुजी मोरे...
दो सद्ज्ञान सुबुद्धि सदा मम
दिखे मार्ग खरो ॥२॥ प्रभूजी मोरे...
जीवन में सुख शांति रहे नित
त्रिविध ताप हरो ॥३॥ प्रभूजी मोरे...
तो समान दाता नही दीखो ।
देख्यो जग सगरो ॥४॥ प्रभूजी मोरे..
ले प्रभूजी आश अब तेरी ।
तेरी शरण पाड्यो ॥५॥ प्रभूजी मोरे..
वेदज्ञान की ज्योति जगा दो ।
हट जाय तम अधियारो ॥६॥ प्रभूजी मोरे...
संध्या और गायत्री जप लो ।
हो मन में उजियारो ॥७॥ प्रभूजी मोरे..
जीवन सफल बनाओ प्रभूजी ।
मेरो तो हो उद्धारो ॥८॥ प्रभूजी मोरे...
'केवल' ओ३म् नाम ही ध्यावे ।
हो भव से निस्तारो ॥९॥ प्रभूजी मोरे...

❋ ❋ ❋

नौ द्वारे का पिंजरा

नौ द्वारे का पिंजरा, तामे पंछी-पौन ।

रहने में अचरज भया, गया अचंभा कौन ॥

पंछी उडजाना

तू कर ले यतन हजार, पंछी उडजाना
यह पंछी है बडा अनोखा ।
एक दिन देवे निश्चित धोखा ।
क्यों सोता चादर तान पंछी उड जाना ॥१॥ तू कर ले...
इस पंछी का नहीं ठिकाना ।
इसने निकल जरुरी जाना ॥
चाहे ऱो-रो हो हैरान पंछी उड जाना ॥२॥ तू कर ले...
तन पिंजरे से उड कर जावे ।
पकडो कितना हाथ न आवे ।
लम्बी भरे उडान पंछी उड जाना ॥३॥ तू कर ले...
योगीजनोंने जोर लगाया ।
नही किसी ने काबू पाया ॥
हुआ यतन बेकार, पंछी उड़ जाना ॥४॥ तू कर ले...
जीवनभर तू, धन-धन बोले ।
धर्म करम में चिंतन धर ले ॥
तेरा धर्म ही करेगा बेडा पार पंछी उड जाना ॥५॥
'केवल' भाईयो ओ३म् उच्चारो ।
ओ३म् नाम हृदय में धारो ॥
तेरा हो जायगा भव से पार, पंछी उड जाना ॥६॥ तू कर ले..,
तू कर ले यतन हजार पंछी उड जाना ॥

मनुष्य जीवन पर चेतावनी

सभी को जाना है स्मशान ।
राजा रंक धनी और निरधन सब हैं एक समान ॥धृ.॥
क्रूर काल रुपी अजगर है, बैठा मुँह फैलाये ।
पता नहीं यह यह बैरी जग में, किस को कब खा जाये ॥
बसी बस्तियों को न जाने, कम कर दे सुनसान ॥१॥ सभी को...
गया सिकंदर देखे जिसने, विश्व विजय के सपने ।
पडे छोड़ने उसको सारे, हिरे पन्ने अपने ॥
ढेरों चांदी सोना छोडा, छोडा कुल सम्मान ॥२॥ सभी को...
नादिर शाही गजनबी गोरी, दुष्ट अनेकों लुटेरे
आये गये नहीं रह पाये जग में उनके डेरे ॥
रक्त बहाते रहे व्यर्थ ही ये अज्ञानी नादान ॥३॥ सभी को...
समय दौडता जाये पल-पल, छीजे तेरी काया ।
रटता जाये किंतु रात-दिन तू माया ही माया ।
माया जाल काट दे अब तो आतम को पहचान ॥४॥ सभी को...
सभी को जानो है स्मशान, राज-रंक धनी और निर्धन सब हैं एक समान.
वेद मार्ग तू धर ले मानव जीवन सफल बना ले ।
ऋषि शिक्षा में चलकर, अपना मारग सरल करा ले
इसी जन्म में मिल जायेगा मुक्ति, परम विधान ॥५॥ सभी को...
सभी को जाना है स्मशान
राज रंक धनि और निरधन सब हैं एक समान।

***

प्रभू प्रार्थना

मोही और न प्रभू तरसाओ ।

जन्म-जन्म से भटक रहा हूँ अब तो गले लगाओ ॥धृ॥

देख लिया संसार को सारा, कोई नही है हमारा ।

सुख के साथी बहुत मिले पर दुःख में करे किनारा ।

तेरे दरस की अँखियाँ प्यासी, दया सिंधु अब आवो ॥१॥ मोही और न...

घोर तिमिर छाया है चहुँ दिशी, भंवर बीच है नैया ।

आया है तूफान भंयकर, कोई नही है खिवैया ।

डगमग - डगमग डोल रही है, मेरी नाव बचाओ ॥२॥ मोही और न...

सर्प विषैले चौह तरफ से, किस्ती पर चढ आये ।

लगता मृत्यु खड़ी है सम्मुख, प्राण मेरे घबराये ।

क्यों नही आते परम पिताजी, अब क्यों देर लगाओ ॥३॥ मोही और न...

दीनानाथ दया के सागर, भगवन आप कहाते ।

त्रसित, दुःखी संतप्त जनों को, तुम ही हृदय लगाते ॥

मेरी बारी पर क्यों रुठे, यह तो जरा बताओ ॥४॥ मोही और न...

तेरी आशा की सांसो में, है 'केवल' तन में जीवन ।

करे अनुग्रह प्रभू अवश्य, आशा 'प्रदीप' है क्षण-क्षण ।

डूबा मैं डूबा मैं भगवन, बन मल्हाह बचाओ ॥५॥ मोही और न...

मोही और न प्रभू तरसाओ

जन्म-जन्म से भटक रहा हूँ, अब तो गले लगाओ॥

प्रभू की अद्‌भुत रचना

प्रभुने देखो कैसा रचा है, संसार ।
जो जैसा करता है वैसा, फल देता करतार ॥ध्रु॥

भूमण्डल आकाश बनाया, सूरज का प्रकाश दिखवाया ।
तारांगण चंदा चमकाया मही का भी पार न पाया ॥
किया अति विस्तार ॥१॥ प्रभु ने देखो...

सुन्दर मानुष देह बनाई, सूरत में सबके अधिकाई ।
देखन में सब के मन भायी, कीट पतंग पशु देह धारी ॥
सबका रचनाहार ॥२॥ प्रभु ने देखो...

कहीं ओले कहीं बर्फ गिराये, शीत गरम कहीं हवा चलाये ।
कहीं गर्मी कहीं सर्दी लावे, कहीं वर्षा की झड़ी लगावे ।
कैसी चले फुहार ॥३॥ प्रभु ने देखो...

कहीं पे सुन्दर बन उपजाये, कहीं बेल-बूटे हैं लगाये ।
कहीं बडे तालाब बनाये, पर्वत कहीं सागर लहराये ॥
एक से एक महान ॥४॥ प्रभु ने देखो...

वृक्ष और पौधों की हरियाली, भांति-भांति के फूलों की लाली ।
बिन सुगन्ध के कोई नहीं खाली, फल फूलों की छबी निराली ॥
करे जगत उपकार ॥५॥ प्रभु ने देखो...

आवो सब मिल ध्यान लगावे, परम पिता से प्रीति बढावे ।
जिससे हर दम आनन्द पावे, 'केवल' नाम प्रभु गुण गावें ॥
पावे शान्ति अपार ॥६॥ प्रभु ने देखो...

आर्य राष्ट्र के महाराजा अश्वपति की घोषणा

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः ।
नाऽनाहिताग्निर्नाऽविद्वान् न स्वैरी-स्वैरिणी कुतः ।

कविता भाव

मेरे राज्य में चोर नहीं ना कृपण कोई नर-नार है ।
मद्यपान जैसे दुर्व्यसनों से न किसी को प्यार है ॥१॥

रहे हवन से वंचित कोई, ऐसा ना परिवार है ।
नहीं एक भी अशिक्षित, अज्ञानी मूर्ख गंवार है ॥२॥

सदाचार संयम व्रतधारी सब, न कहीं व्यभिचार है ।
शील सतीत्व सुरक्षित है, नारी का सद् व्यौहार है ॥३॥

ऋषिवर मेरे राज्य में होता, कहीं न पापाचार है ।
'अश्वपति' महिपाल के ये उद्गार सुनो संसार है ॥४॥

स्वतंत्र भारत में ही देखो, कितना भ्रष्टाचार है ।
मद्य-मांस की नदियाँ बहती, गौ हत्यारी सरकार है ॥५॥

गो हत्या के महा पाप से, भारत, दुःख पाता है ।
गो हत्या के महा नाश से, त्राही-त्राही होती है ॥६॥

(कमलेशकुमार अग्निहोत्री)

चेतावनी अन्ध विश्वासी हिन्दू समाज को

होवेगा कैसे हिन्दू का बेड़ा पार।

फँसा जाल में पाखण्डों के हो गए पाँच हजार ॥१॥

नकली नागदेव के आगे सारे शीश झुकाते हैं।

नाचे कूदे भोग लगाते, ढ़म-ढ़म ढोल बजाते हैं।

असली नाग मिले तो भैया, करते मारा-मार ॥२॥

रोली मोली लगा सुपारी, गणपत को पुजवाते हैं।

घर ले जाकर पोंगा पंडित कतर-कतर खा जाते हैं।

मंगलकारी श्री गणेश का, यह कैसा सत्कार ॥३॥

सेवा पूजा करे श्रवण की, श्रवण सरीका नहीं कोई।

अब तो प्यारे माता-पिता को, रोटी देता नहीं कोई।

मरने पर हरिद्वार जा रहे, घर नाही जिमनार ॥४॥

दरगा पीर पैगम्बर जाकर, अपना शीश झुकाते हैं।

भेरु-भोंपा के चना बाकला, दारुड़ी ले जाते हैं।

माताजी के काटे बकरा, हत्यारे नर-नार ॥५॥

पीपल-तुलसी ब्याह रचे तो धर्म बडा बताते हैं।

विधवा नारी ब्याह रचे तो उसको तो पाप लगाते हैं।

बिना पति के तरसे नारी, कैसा अत्याचार ॥६॥

पत्थर पूजे हरिद्वार में जाकर हाड गिराते हैं।

सात वर्ष का लगा शनिश्चर, सुनकर घबराते हैं।

कब जागेगी हिन्दू जाति, कुछ तो करो बिचार ॥७॥

पाखण्डों की पोल खोल कर मैं तुमको समझाता हूँ।

छोड़ो गफलत की यह निद्रा सच्ची राह बताता हूँ।

कहे नन्द वेदों को पढ़कर कर लो आत्म-सुधार ॥८॥

घमंड में

(कवि अयोध्यासिंहजी)

मैं घमंड में भरा ऐंठा हुआ, एक दिन जो मुण्डेरे पर खडा ।
अचानक आ दूर से उडता हुआ एक तिनका मेरी आँख में पड़ा ।
मैं झिझक उठा बेचैन-सा, लाल होकर आँख भी दुखने लगी ।
मूँठा देने लोग कपडे की लगे, ऐंठ बिचारी दबे पावों भागी ॥२॥
जब किसी तरह निकल तिनका गया, तब समझने यों ताने दिये ।
ऐंठता तू किसलिये इतना रहा, एक तिनका है बहुत तेरे लिये ॥३॥

रे प्राणी मतकर तू अभिमान

रे प्राणी! मत कर तू अभिमान ।
एक दिन सोने-सी काया, जले बीच स्मशान ॥ध्रु॥
जीवन में जो सम्पत्ति जोडी, करि-करि जतन महान ।
दुःखियों की सेवा में इसको, करते रहना दान ॥१॥ रे प्राणी मत कर...
धरा-धाम धन है यह तेरा, परिवार सकल समान ।
सब कुछ छूट जायेगा तुझ से, बात सत्य यह मान ॥२॥ रे प्राणी मत कर...
श्रेष्ठ कर्म ही धन है तेरा, धर्म की यही दुकान ।
यही साथ जायेंगे तेरे, जाय न कुल सन्तान ॥३॥ रे प्राणी मत कर...
ब्रह्म नहीं तू जीवात्मा है, कर अपनी पहचान ।
कर्म फलों को भोग के बन्दे, करना है प्रस्थान ॥४॥ रे प्राणी मत कर...
मुक्ति पथ के पथिक जीव तू, कर ले अमृत पान ।
मनवाराम जगत में अब तू, कुछ दिन का मेहमान ॥५॥ रे प्राणी मत कर...
'मानव' ओ३म् नाम तू जप ले, तज करके अभिमान ।
जीवन अपना सफल बना ले,' ऋषि शिक्षा को मान ॥६॥ रे प्राणी मत कर...

राष्ट्र की उन्नति कैसे हो ?

ब्राह्मण ब्रह्मतेजसम होवे, त्यागी और तपस्वी होवे।
होवे वेद ज्ञान गुणवान, तब भारत का हो उत्थान ॥१॥

क्षत्रिय राम-कृष्ण सम होवे, राष्ट्र भावना मन में होवे।
पावे जग में कीर्ति महान, तब भारत का हो गौरव गान ॥२॥

वैश्य बन्धु हो दानी ऐसे, बने सभी भामाशाह जैसे।
देकर के लक्ष्मी का दान, तब भारत का हो कल्याण ॥३॥

धेनु सुन्दर हो अति प्यारी, पय की धार बहाने वारी।
करे सभी अमृत का पान, भारत वीर बने बलवान ॥४॥

वृषभ बने सारे बलशाली, भूमि कहीं न रहे खाली।
बने देश अन्न धन की खान, होवे सब का इस पर ध्यान ॥५॥

शीलवती होवे सब नारी, पतिव्रता सीता-सी सारी।
वीर प्रसूता मातृमहान, भारत राष्ट्र की हो सन्तान ॥६॥

जब चाहे जब जल बरसावे, आर्य राष्ट्र को स्वर्ग बनावे।
होवे जग में जय-जय गान, विश्व नमन फिर करे जहान ॥७॥

योग क्षेम युत हो नर-नारी, विनय प्रभु से यही हमारी।
मानव को दो प्रभु यह वरदान, गीता में कहे श्रीकृष्ण सुजान ॥८॥

किससे क्या सीखें ?

फूलों से तुम हँसना सीखो, भंवरों से तुम गाना ।
सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना ॥१॥

धुएँ से प्यारे तुम सीखो, ऊँची मंजिल पर जाना ।
वायु के झोंके से सीखो, हरकत में आ जाना ॥२॥

वृक्षों की डाली से सीखों, फल पाकर झुक जाना ।
मेहंदी के पत्तों से सीखो, पिस-पिस रंग चढ़ाना ॥३॥

धागे और सुई से सीखो, बिछडे गले लगाना ।
मुर्गे की बोली से सीखो, प्रातः प्रभु गुण गाना ॥४॥

पानी की मछली से सीखो, धर्म हित मर जाना ।
ओ३म् नाम से सीखो, भवसागर तर जाना ॥५॥

दयानन्द से सीखो प्यारे, जीवन सफल बनाना ।
वेद ज्ञान को पढ़कर सीखो, जग को भला बनाना ॥६॥

प्रार्थना

भगवन पार करो मेरी नैया ।

प्रभुजी भव सागर मेरी नैया ॥धु.॥

गहरी नदिया नाव पुरानी,

खेवटीया मूरख अज्ञानी ।

मन मोरा थर-थर कम्पत है,

दिखे न कोई खिवैया ॥१॥ भगवन पार...

लहरे क्रोध भरी हैं यम की,

देती है मृत्यु की धमकी ।

हो अधीर धीरज खो बैठा,

तुम हो धीर बंधैया ॥२॥ भगवन पार...

चारों ओर कोई और न दीखे,

जाऊँ कहाँ कोई ठोर न दीखे ।

नाम की लाज रखो प्रभू अपनी,

तुम हो लाज रखैया ॥३॥ भगवन पार...

ओ३म् ही माता-पिता हमारा,

ओ३म् ही बन्धु सकल परिवारा ।

ओ३म् ही 'मानव' पालन हारा ।

ओ३म् ही पार लगैया ॥४॥ भगवन पार...

भगवन पार करो मेरी नैया

भगवन भव सागरी में है मेरी नैया॥

धन की सीमा

धन चाहत निश दिन अधम, मध्यम धन अरु मान ।

उत्तम चाहत मान ही, चाहत कछु न महान ॥

धन से भोजन मिलाता है, किन्तु भूख नहीं ।

धन से पुस्तकें मिलती है, किन्तु ज्ञान नहीं ।

धन से एकांत मिल सकता है, किन्तु शांति नहीं ।

धन से बिस्तर मिल सकता है, किन्तु नींद नहीं ।

धन से वैभव प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु आत्मशांति नहीं ।

धन से आभूषण मिलते हैं, किन्तु रूप नहीं ।

धन से सुख मिलता है, किन्तु आनन्द नहीं

अतः धनवान होने के साथ-साथ चरित्रवान होना भी आवश्यक है ।

मेधा बुद्धि-प्रार्थना

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरूश्चो पासते ।

तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाबिनं कुरु ॥

भावार्थ

ज्ञानवान मोहे कीजिये, जगदीश्वर भगवान।
बिना ज्ञान के हे प्रभो, मिटे न तम अज्ञान ॥१॥

जिस बुद्धि की कामना करते हैं विद्वान्।
उस बुद्धि का दीजिये, मुझ को प्रभु वरदान ॥२॥

बुद्धि पाकर मैं करूँ, पावन वेद प्रचार।
जीवन मेरा सफल हो, जग का हो उद्धार ॥३॥

मेधा बुद्धि के लिये, पितर देवगण आज।
करते हैं आराधना, करने को शुभ काज ॥४॥

मानव की है प्रार्थना, सुनिये कृपा निधान।
ऐसी बुद्धि दो मुझे, जग को करूँ सुजान ॥५॥

ग्रुरुवर दयानन्दने, दिखलाया वैदिक पथ का ज्ञान।
ये वैदिक अमृत पान का, मानव कर लो सभी जहान ॥६॥

प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में अमृत की वर्षा होती है
जागनेवाला पाता है सोनेवाला खोता है

भजन

प्रातः बेला जाग अमृत बरस रहा!
ओ३म् ही ओ३म् उच्चार-अमृत बरस रहा ॥ध्रु.॥

चार बजे के पीछे सोना, है अपने जीवन को खोना।
झट बिस्तर को त्याग, अमृत बरस रहा ॥१॥

परोपकार का लक्ष्य बना ले, जीवन अपना सरल बना ले।
आलस निद्रा त्याग, अमृत बरस रहा ॥२॥

वेद ज्ञान की ओढ़ चदरिया, छल दम्भ-द्वेष की छोड डगरिया।
रखना इसे बेदाग, अमृत बरस रहा ॥३॥

मानुष तन अमोलक पाया, ऋषि मुनियोंने ही बताया।
क्यों सोता निरभाग, अमृत बरस रहा ॥४॥

ओ३म् नाम का पकड़ सहारा, भवसागर से उतरे पारा।
प्यारे अब तो जाग अमृत बरस रहा ॥५॥

ओ३म् नाम को जप ले, मन बुद्धि को निर्मल कर ले।
सन्ध्या हवन में लाग, अमृत बरस रहा ॥६॥

प्रातः बेला जाग अमृत बरस रहा।
ओ३म् ही ओ३म् उच्चार अमृत बरस रहा ॥७॥

प्रार्थना

मांग रहे हम दे वरदान! दो बुद्धि सबको भगवान ॥ध्रु॥

ज्ञान प्रकाश हृदय में भर दो, श्रद्धा अमृत से उर भर दो ।
प्रभु! आप ही यह वर दो, भक्ति प्रेम रस करो प्रदान ॥१॥

पूरा हो संकल्प हमारा, आर्य बने भूमण्डल सारा ।
वेद भानु का हो उजियारा, मिटे अविद्या अरू अज्ञान ॥२॥

वैदिक धर्म सभी अपनावें, छोड़ कुपंथ सुपथ पर आवें ।
भ्रम में व्यर्थ न मन भटकावे, करे असत्-सत् की पहचान ॥३॥

हर वाणी में वैदिक स्वर हो, पञ्चमहा यज्ञ घर-घर हो ।
सभी सुशिक्षित नारी-नर हो, सर्वत्र साम का गान ॥४॥

सुदृढ़ रहे प्रेम की माला, जले न कहीं द्वेष की ज्वाला ।
हो न किसी का भी मन काला, हो हर मुख पर मृदु मुस्कान ॥५॥

मानवता का मान बढ़ावे, ऋषियों वाला युग फिर लावे ।
सब को सत्य मार्ग दिखलावे, पावे पुनः पूर्ण सम्मान ॥६॥

कभी न कहीं धर्म का क्षय हो, ऋषिवर दयानन्द की जय हो ।
सब ही का जीवन सुखमय हो, हो हर मानव का उत्थान ॥७॥

हो मृदु सत्य मनुज की वाणी, हो 'कमलेश' सुखी सब प्राणी ।
विनय यही है दाता-दानी, सारे जग भर का हो उत्थान ॥८॥

(पं.कमलेशकुमार अग्निहोत्री, किशनगढ, अजमेर)

भजन

ओ३म् नाम के साबुन से

प्यारे! ओ३म् नाम के साबुन से, मन का मैल मिटायेगा ।
निर्मल मन के मन्दिर में, भगवान के दर्शन पायेगा ॥धु.॥

रोम-रोम में ओ३म् रमे, एक पल भी तुझ से दूर नही ।
देखेगा जो मन मन्दिर में, ज्ञान की ज्योति जलायेगा ।
देख सके न ये आँखे, भीतर ज्योति जगायेगा ॥१॥

यह शरीर अनमोल है प्राणी, प्रभु कृपा से पाया है ।
झूठे जग झगड़ों में फँसकर, प्रभु को क्यों विसराया है ।
ओ३म् नाम ही अन्त समय में, साथ तुम्हारे जायेगा ॥३॥

झूठ कपट निन्दा को त्यागो, हर प्राणी से प्यार करो ।
घर आये महमान की सेवा से न कभी इन्कार करो ।
न जाने किस भेष में आकर, सद्‌गुरु ही मिल जायेगा ॥४॥

माया का अभिमान न कर, यह तो चंचल रानी है ।
राजा-रंक अनेक हुए, कितनों की सुनी कहानी है ।
समय हाथ से निकल गया तो, सिर धुनकर पछतायेगा ॥५॥

(अज्ञात)

आर्य विवाह संस्कार पर
बेटी को मां का उपदेश

वैदिक परम्परा मर्यादा, निभाये जाना बेटी ॥ध्रु.॥

अब समय ससुर घर जावो, मत रोवो न हमें रुलाओ।
अपने बचपन का संसार, भुलाये जाना बेटी ॥१॥

सब काम समय पर करना, चीजें जहां की तहां धरना।
उत्तम भोजन सबको बनाय, खिलाये खाना बेटी ॥२॥

जो दे प्रभु सम्पति भारी, तो गर्व न करना प्यारी।
अपने राष्ट्र धर्म हित दान, दिलाये जाना बेटी ॥३॥

निर्धनता अगर आ जावे, तुझ से निजधर्म छुडावे।
दुःख में धीरज से काम, चलाये जाना बेटी ॥४॥

फैशन में मत फँस जाना, नहीं फूहडपन दिखलाना।
उत्तम गृहणी का श्रृंगार, सजाये जाना बेटी ॥५॥

मत मियां मदार मनाना, नही पत्थर शीश झुकाना।
सन्ध्या गायत्री और हवन, रचाये जाना बेटी ॥६॥

नित गो माँ की सेवा करना, घृत, दूध, मलाई खूब खिलाना
गोमाता का पालन, करना मेरी बेटी ॥७॥

ऋषि शिक्षा सार सुनाया, सुख होगा अगर निभाया।
सबको कर जोड नमस्ते, गान सुनाये जागा बेटी ॥९॥

विश्व में शान्ति रहे

ओ३म् द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप :

शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः

शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि ॥

कविता भाव

शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में ॥ध्रु॥

जल में थल में और गगन में ।

अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में ॥

ओषधि वनस्पति बन उपवन में ।

सकल विश्व में जड़ चेतन में ॥२॥

ब्राह्मण के उपदेश बचन में ।

क्षत्रिय के द्वार होरण में ।

वैश्य जनों के होवे धन में ।

और शूद्र के हो चरनन में ॥

शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में ॥२॥

शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में ।

नगर ग्राम में और भवन में ।

जीव मात्र के तन में मन में ।

और प्रकृति के हो कण-कण में ।

शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में ॥४॥

बालक के जन्म दिवस पर मंगल कामना

इस कुल का यह दीपक बालक, प्यारा आयुष्यमान हो ।
तेजस्वी, वर्चस्वी, निर्भय, सर्वोतम विद्वान हो ॥ध्रु.॥

बने सुमन-सा कोमल सुन्दर, दानी बन कर दान करे ।
दुष्टों से न डरे कभी यह, श्रेष्ठों का सम्मान करे ।
मानव धर्म समझकर चलनेवाला, चतुर गुणवान हो ॥१॥

विजय कीर्ति जय हो इसकी, पावे सुख सम्मान भी ।
शत् आयु हो अधिक हो जीवन, करे धर्म हित दान भी ।
नेता बने यह देश अपन का, शिव-प्रताप सा वीर सुजान हो ॥२॥

परम भक्त बन परम प्रभु का, अपना यश फैलाये यह ।
माता-पिता की सेवा करके, श्रवण कुमार कहलाये यह ।
नाम अमर करे जग में अपना, सर्व गुणों की खान हो ॥३॥

गोमाता अरु भारत माता, जननी का यश फैलाये ये ।
भारत राष्ट्र की सेवा करके, गौरव मान बढ़ावे ये ।
मानव की है यही प्रार्थना, यह बालक आयुष्यमान हो ॥४॥

इस कुल का यह दीपक बालक, प्यारा आयुष्यमान हो ।
तेजस्वी, वर्चस्वी, निर्भय, सर्वोतम विद्वान हो ॥

वैदिक आरती भजन

ओ३म् जय जगदीश पिता, ओ३म् जय जगदीश पिता

आर्य जनों के संकट, क्षण में दूर करें ॥१॥ ओ३म् जय...

अनन्त अनादि अजन्मा, अविचल अविनाशी ।

सत्य सनातन स्वामी, शंकर सुख राशि ॥२॥ ओ३म् जय...

सेवक जन सुखदायक, जननायक तुम हो ।

शुभ सुख शान्ति सुमंगल, वरदायक तुम हो ॥३॥ ओ३म् जय...

मैं सेवक शरणागत, तुम मेरे स्वामी ।

हृदय पटल में प्रगटो, प्रभु अन्तरयामी ॥४॥ओ३म् जय...

काम, क्रोध, मद मोह, कपट छल, व्यापे नहीं मन में ।

लगन लगे प्रभु मन की, गुण तेरे वर्णन में ॥५॥ ओ३म् जय...

नित्य निरंजन निशि दिन, तेरो ही जाप करें ।

तव 'प्रताप' से स्वामी, तीनों ही ताप हरे ॥६॥ ओ३म् जय...

पतित-उद्धरण तारण, शरणागत तेरी ।

भूले न भटके भ्रम में, निर्मल मति मेरी ॥७॥ ओ३म् जय...

शुद्ध बुद्धि से मन में, तेरो ही ध्यान धरें ।

सब विधि छल-बल तज के, तेरी शरण पड़ें ॥८॥ ओ३म् जय...

ऋषि गुण-गान

स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती

नादान लोगों ने उस योगी का भेद न पाया। टेर।

कोई कहे मत आ इस द्वारे, विष दाता कह पत्थर मारे।

क्या जाने किस्मत के मारे, सुधा कलश ले आया॥

गाली देते नहीं लजाये, विष का प्याला लेकर आये।

जोगी मेरा प्रेम दिवाना, विष का घूंट उड़ाये॥

रोम-रोम बन फोड़ा बोला, सेवा के कारण था चोला।

खूब करी प्रभु ने ये लीला, उसका उसे चढ़ाया।

रोम-रोम का बना फँवारा, फूट पड़ी अमृत की धारा।

एक बूंद ने नास्तिक 'मुनि' का, सारा मोह भगाया।

बार-बार नर जीवन पाऊं, बार-बार बलिदान चढ़ाऊं।

ऋण तो भी मुझ से ऋषि तेरा, जाये नहीं चुकाया।

देव दयानब्द प्रभु का प्यारा, वेदज्ञान का लिया सहारा।

पाखण्डों का भूत भगाकर, जग का अज्ञान मिटाया॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती का आर्यों को सन्देश

आर्यो! मेरी बात पर ध्यान देना ।
समाधि मेरी कहीं तुम न बनाना ॥
न चद्दर न फूल माला तुम चढ़ाना ।
न पुष्कर, गया में अस्थियां ले के जाना ॥
न गंगा में तुम मेरी अस्थियाँ बहाना ।
न ये व्यर्थ के झगड़े तुम पाल लेना ॥
मेरी अस्थियां किसी खेत में डाल देना ।
कि जिससे मेरी अस्थियां खाद बनकर ॥
काम आये कभी कृषक दीन जन के ।
आर्यो मेरे नाम से कोई पाखण्ड न चलाना ॥
मेरी वेद-शिक्षा पर तुम ध्यान देना ।
विश्व को तुम आर्य बना के बताना ॥
यही एक मानव भावना है मेरी ।
इसे तुम साकार करके दिखाना ॥
स्वयं आर्य बनो, परिवार को बनाना ।
व्यसन-दाग काले कभी मत लगाना ॥

जग में क्या खोया? क्या पाया रे?

हाथ बढ़ाया पुष्प लता को, कंटक ने डस खाया रे ।

जग में क्या खोया? क्या पाया रहे? ॥टेर॥

सुन्दर कोमल गात्र देख नर, फूला नहीं समाया रे ।

जरा व्याधि का वेग बढ़ा तब बह गई सुन्दर काया रे ॥

सुख के सपने रैन में देखे, जागा कष्ट उठाया रे ।

मृग-मरीचिका सम हम सबको, माया ने भरमाया रे ॥२॥

सुख की खोज में उड़े वायु में, गगन में भवन बनाया रे ।

टूटे पंख गिरे पृथ्वी पर, मिली न सुख की छाया रे ॥३॥

मन मूरख चंचल नहीं माने, बार-बार समझाया रे ।

इस अपार संसार में रहकर, कह किसने सुख पाया रे ॥४॥

मानव देह मिली दुर्लभ है, मानव क्यों भरमाया रे ।

ओ३म् भक्ति बिनु सार नहीं है वेदों ने बतलाया रे ॥५॥

ऋषि गुणगान

ऋषिराज दयानन्द आवोजी ।
मारी सभा में रंग बरसावोजी ॥टेर॥
थारी बाताँ प्यारी लागेजी ।
वेदों का मरम बतावोजी ॥१॥
होली का महत्व बतावोजी ।
यह गन्दा नाच मिटावोजी ॥२॥
मैं भटक्यो चारों धामाजी ।
नहीं मिली शांति सुख नामाजी ॥३॥
वैदिक है धर्म सनातन जी ।
सब पाखण्ड जाल हटावांजी ॥४॥
म्हाने संध्या हवन सिखावोजी ।
पंच यज्ञों का व्रत धारो जी ॥५॥
ओ३म् नाम गायत्री का जप ।
मन-मन्दिर ध्यान लगावोजी ॥६॥
जीवन की ज्योति जगावांजी ।
भवसागर पार लगावांजी ॥७॥
मानव है ओ३म् आधारा जी ।
गुरु विरजानन्द ने बतलायाजी ॥८॥
ऋषिराज दयानन्द आकोजी ।
म्हारी सभा में रंग बरसावोजी ॥९॥

कभी न भूलूँ तेरा नाम

हे करुणामय दया-निधान,
कभी न भूलूँ तेरा नाम ।

श्वास-श्वास हो तेरा सिमरन,
पल-पल होवे तेरा चिन्तन,
मुझको दे दो यह वरदान ।
कभी न भूलूँ तेरा नाम ॥१॥

दुःख में तुझको याद करूँ मैं,
सुख में चरणों सीस धरूँ मैं,
तुझको ध्याऊँ आठों याम ।
कभी न भूलूँ तेरा नाम ॥२॥

रोम-रोम में तुझे निहारुँ,
शुद्ध हृदय से ओ३म् उचारूँ,
रचना देखूँ करुँ प्रणाम ।
कभी न भूलूँ तेरा नाम ॥३॥

घट में पाऊँ दर्शन तेरा,
लख चौरासी ना होवे फेरा,
पहुंचूँ तेरे पावन धाम ।
कभी न भूलूँ तेरा नाम ॥४॥

मनाव ओ३म् नाम प्रभु तेरा,
वेद ज्ञान का दिया उजाला,
प्रातः सायं करुँ मैं ध्यान ।
कभी न भूलूँ तेरा नाम ॥५॥

कृष्ण-वचन

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।

परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम् ।

धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे ।। (गीता अ. ४-७१)

भारत में कैसे आऊँ मैं?
यूँ बोले कृष्ण मुरारी, भारत में कैसे आऊं मैं ॥टेर॥
मुझे चाहिए माखन मिश्री, दूध दही का खाना ।
अब दोगे तुम डब्बल रोटी, बिस्कुट चाय पिलाना ॥
क्या फैली है बीमारी । भारत में कैसे...
लाखों गऊएँ चाहिए मुझको, मेरा काम चराना ।
अब लेकर कुत्तों को संग में, पड़े टहलने जाना ।
चाहे पुरुष हो या नारी । भारत में कैसे...
दया धर्म और दान कराना, पहला कर्म हमारा ।
आज लूट रहे मेरे नाम पर, क्या यह ढंग निकारा ।
ये पण्डे और पुजारी । भारत में कैसे...
मुझे चाहिए चक्र सुदर्शन, अर्जुन-सा बलधारी ।
बनकर आज शिखण्डी, रास की लीला निकारी ।
भारत की दशा बिगारी । भारत में कैसे...
यदि चाहते हो मुझे बुलाना, गौ-हत्या बन्द कराओ ।
शराब मछली अण्डों का, आहार बन्द कराओ ।
बोले यूँ कृष्णमुरारी, भारत में जब मैं आऊंगा ।
वैदिक शिक्षा घर-घर होवे, बने वीर ब्रह्मचारी ।
गौ माता की सेवा करते, भारत के नर-नारी ।
हो दयानन्द ब्रह्मचारी, भारत में जब मैं आऊंगा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य परिवारो! यह व्रत धारो ।
विश्व जगाना है । आर्य बनाना है ।
सब सत्य विद्या और पदार्थ, विद्या से जाने जाते हैं ।
उन सबका आदि मूल, परमेश्वर यह बतलाना है ।
चौबीस अक्षरी मन्त्र गायत्री, सबको सिखवाना है ॥१॥
वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना ।
समझ इसी को परम धर्म, ना कोई करे बहाना ।
नाहक भटके कबरों पर अटके उन्हें छुड़ाना है ॥२॥
पंच यज्ञ घर-घर में करना, सीखें सब नर-नारी ।
दुर्व्यसनों से दूर रहें, बनें सदाचारी ब्रह्मचारी ।
अभक्ष्य पदारथ समझ अकारथ, उन्हें हटना है ॥३॥
मातृवत् परदारेषु, पर धन मिट्टी जाने ।
वैदिक शिष्टाचार को बरते, सीखे वेद के गाने ।
ऋषि दयानन्द के गुण अन्दर, झुके जमाना है ॥४॥
गोमाता का पालन करना, सीखें सब नरनारी ।
कृष्ण कन्हैया राम रमैया, हो गोपालक जारी ।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, वैदिक घोष गुंजाना है ॥५॥

नव दम्पति की मंगल कामना

"रहे प्रभु! यह दम्पती आयुष्यमान"

ज्योति है जिस कुल की दम्पति कुल का हो उत्थान ।
सद् गृहस्थी ईश्वर विश्वासी गुण ग्राही श्रीमान ॥१॥

धर्म में निष्ठा सत्यव्रती हों, वेदों के विद्वान ।
वीर हो श्रीकृष्ण सरीखे, दानी कर्ण समान ॥२॥

पूर्व श्रेष्ठ परिवार जनो सम, दम्पति की सन्तान ।
माता-पिता के आज्ञाकारी, श्रवण कुमार समान ॥३॥

राम-सीया सदृश अतिप्रेमी, उत्तम कुल की खान ।
देश धर्म गो सेवा व्रत का जीवन लक्ष महान ॥४॥

शिव-प्रताप से भक्त राष्ट्र हो, दम्पति के गुणवान ।
दयानन्द सम ईश भक्त हो, हरे सकल अज्ञान ॥५॥

मानव विय यही है प्रभुजी, हो दम्पति आयुष्मान ।
ज्ञान विज्ञान कला कौशल में, रहे पूर्ण विद्वान ॥६॥

ईश्वर विश्वास पर ब्रह्म कवि-बीरबल व अकबर

कण कीड़ी मन कुँजरा,
अनल पंक गज पांच ।
मोती देत मराल को,
रख प्रभु वर में सांच ।।

जब दाँत न थे तब दूध दियो ।
जब दुध दियो कह अन्न न देहै ।
जो जल में थल में पशु पक्षिन की,
सुध लेहै सो तेरी भी लैहै ॥१॥

जान को देत अजान को देत,
जहान को देत सौ तौको भी दैहैं ।
काहे को सोच करे मन मूरख,
सोच करे कुछ हाथ न ऐ है ॥२॥

यद्यपि द्रव्य को सोच करे,
पर गर्भ में केते गाँठ को खोयो ।
जादिन जन्म लियो जग में,
तब कैतिक कोटी लिये संग आयो ॥३॥

वाकौ भरोसौ न छाँड अरे मन,
जा सौ अहार अचेत में पायो ।
'ब्रह्म' कहें सुन शाह अकबर,
देख मेरों मन यों हुलसायो ॥४॥

वैदिक पंचमहायज्ञ - नित्यकर्म विधि एवं आनन्द संग्रह प्रकाशनार्थ सहयोग दाताओं की नामों की सूची

१) श्रीमान प्राचार्य सदाविजयजी आर्य, अध्यक्ष श्यामलाल स्मारक शिक्षण संस्था, उदगीर - दोनों पुस्तकों का डी.टी.पी. का काम संस्था द्वारा करके सहयोग किया.

२) श्रीमान गोविंदलालजी बाहेती, स्वातंत्र्य सेनानी लातूर - आनन्द संग्रह पुस्तक के चार आवरण पृष्ठ का छपाई खर्च दिया.

३) श्रीमान रिझमल, ठाकुरदास कराचीवाला फर्म अहमदनगर - वैदिक पंचमहायज्ञ - नित्यकर्म विधि के आवरण पृष्ठ की छपाई.

४) श्रीमती केसरबाई नन्दलालजी धूत, संभाजीनगर.

५) श्रीमती सौ.मीरादेवी वेदव्रतजी शर्मा फरीदाबाद.

६) श्रीमती सौ.गायत्रीदेवी श्रीचरणजी शर्मा, कोटा (राजस्थान)..

७) श्रीमान सेठ पुरुषोत्तमजी सारडा, अहमदनगर.

८) श्रीमति कमलादेवी रमेशचंद्रजी शर्मा द्वारा सुरेन्द्र शर्मा, अहमदनगर.

९) श्रीयुत विक्रम वेदव्रतजी शर्मा, फरीदाबाद.

१०) श्रीयुत नवीन श्रीचरण शर्मा, राजेन्द्र स्टुडियो, कोटा (राजेस्थान)

११) श्रीमान आचार्य दात्रयजी आर्य (वाब्ले), प्रधान कार्यालय, अजमेर.

१२) श्रीमान अतुल कुमारजी बोहरा, कॉम्प्युटर सर्विस सेंटर, अहमदनगर.

१३) श्रीमान अशोक कुमारजी सुधाकर, मंत्री आर्यसमाज, बुढानागेट, मेरठ.

१४) श्रीमान सुधाकरजी, सुधाकर प्रेस, मेरठ.

१५) श्रीमान चंदुलालजी, विजय साईकल मार्ट, संभाजीनगर.

१६) श्रीमान जयनारायणजी मुंदडा, प्रधान, आर्य समाज, अहमदनगर.

१७) श्रीमती माताजी धर्मपत्नी हुदारामजी कपडेवलि, पिंपरी, पुणे.

१८) श्रीमान धर्मवीरजी खन्ना, मंत्री आर्यसमाज, जामनगर (गुजरात)

१९) गुप्त दान महिला आर्य समाज, पिंपरी (पुणे)

२०) श्रीमती राजरानी श्रीरामजी भसीन, मेरठ

२१) श्रीमान पं.ब्रह्मानन्दजी शर्मा, आर्य समाज, नया बाँस, दिल्ली.

ओ३म्

आर्यसमाज के नियम

(मानव कल्याणार्थ दस सूत्र)

१. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं. उन सबका आदिमूल परमेश्वर है.

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है. उसी की उपासना करने योग्य है.

३. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है. वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है.

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए.

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए.

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना.

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए.

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए.

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए. किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए.

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें.

बुद्धिदाता गायत्री महामंत्र

(ओ३म्) यह प्रभु का मुख्य नाम है । वह (भूः) प्राणों का प्राण (भुवः) दुखःनाशक (स्वः) सुखस्वरुप है (तत्) उस (सवितुः) सकल जगत् के उत्पादक (देवस्य) प्रभु के (वरेण्यम्) ग्रहण करने योग्य (भर्गः) विशुध्द तेज को हम (धीमहि) धारण करें। (यः) जो प्रभु (नः) हमारी (धियः) बुध्दियों को (प्रचोदयात्) सन्मार्ग में प्रेरित करे।